महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ६० अंक : १९

दयानन्दाब्द: १९४

विक्रम संवत्: आश्विन कृष्ण २०७५

कलि संवत्: ५११९

सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११९

सम्पादक

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु.

त्रिवार्षिक-५८० रु.

आजीवन (१५ वर्ष)-२००० रु.

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर

त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर

आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११२७०

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अक्टूबर प्रथम २०१८

अनुक्रम

०१. और अब समलैंगिकता के बहाने...		०४
०२. मृत्यु सूक्त-१५	डॉ. धर्मवीर	०६
०३. १३५ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		०८
०४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	०९
०५. वेदगोष्ठी-२०१८		१३
०६. देव दयानन्द का ऋषित्व	जगदेवसिंह सिद्धान्ती	१५
०७. पं. नारायण प्रसाद 'बेताब'-३	प्रभाकर	१७
०८. धौलपुर आर्य सत्याग्रह शताब्दी...	रामनिवास गुणग्राहक	१९
०९. प्राणोपासना-१०	तपेन्द्र वेदालंकार	२३
१०. आह! डॉ. भवानीलाल भारतीय...	राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	२७
११. संस्था समाचार		३१
१२. राष्ट्रभाषा के उत्थान में महर्षि...	जगदेव विद्यालंकार	३२
१३. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		३४
१४. शङ्का समाधान- ३४	डॉ. वेदपाल	३५
१५. साहस का पर्याय: आचार्य धर्मवीर	लक्ष्मण जिज्ञासु	३६
१६. एक स्मरण: अग्नि पुरुष को नमन्	अखिलेश आर्येन्दु	३८
१७. मेरी मन की व्यथा	ओम् मुनि	४०
१८. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

और अब समलैंगिकता के बहाने...

भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संविधान की धारा ३७७ के अंतर्गत पूर्व में जिस समलैंगिकता को अपराध की कोटि में रखा गया था उसे अब अपराध की श्रेणी से हटाकर संवैधानिक मान्यता प्रदान कर दी गई है। उल्लेखनीय है कि सर्वोच्च न्यायालय की पाँच सदस्यीय पीठ ने आईपीसी की धारा-३७७ (भारतीय दण्ड संहिता) में अधिकांश प्रावधानों को अपराध से पृथक् कर दिया। ध्यातव्य है कि स्वतंत्रता से पूर्व लॉर्ड केनिंग के समय १८६१ में समलैंगिकता को अपराध मानते हुए कम से कम १० साल और अधिक से अधिक उम्रकैद की सजा का प्रावधान था। एशिया महाद्वीप में बंगलादेश, पाकिस्तान, सऊदी अरब, ईरान, श्रीलंका, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, मॉरिशस तथा अफ्रीका के ७२ देशों में इसे अपराध की श्रेणी में रखा गया है। काँग्रेस के नेता शशि थरूर ने धारा ३७७ में संशोधन हेतु एक निजी बिल भी संसद में प्रस्तुत किया था, लेकिन किन्हीं कारणों से वह पारित नहीं हो पाया। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद समलैंगिकता को अपराध से पृथक् करने का परिणाम यह हुआ कि एतद्विषयक सभी मुकदमे अब समाप्त हो जायेंगे। तथाकथित सामाजिक कार्यकर्ता (सोशल एक्टिविस्ट) और पाश्चात्य संस्कृति में रचे-बसे युवक-युवतियों की इस मांग पर विगत कुछ वर्षों से निरन्तर बहस जारी थी। यह बहस नैतिकता बनाम समलैंगिकता के दायरे में थी। जिसे लगता है विभिन्न राजनीतिक पार्टियों का मौन समर्थन था और भारत का बौद्धिक जगत्, मीडिया इत्यादि भारत की अन्य समस्याओं की अपेक्षा समलैंगिकता के पक्ष में इसे एक मुख्य मुद्दा बनाने की बहस में जैसे लगे हुए हैं।

भारतीय संस्कृति और समाज जिन उदात्त मूल्यों पर निर्मित हुआ है उनमें प्राकृतिक जीवन के प्रति सहज संबन्ध, श्रद्धा और समर्पण का भाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हुआ है। हमारे धर्मग्रन्थ, हमारे त्यौहार, रीति-रिवाज- ये सभी इसके चहुँ ओर गतिमान रहे हैं। इसीलिए '**ऋत**' का प्रत्यय शाश्वत नैतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। इसी से नैतिक सम्प्रत्यय का मापदण्ड समाज में अनवरत रूप से माना जाता रहा। देश और काल के साथ भिन्नताएँ रहीं अवश्य, लेकिन उन सभी को मर्यादा के अन्तर्गत ऋषियों ने, राजाओं ने, संतों ने स्वयं इनका पालन किया और इन्हें समाज में नैतिक मापदण्डों के लिए स्थापित करने के विभिन्न प्रयास भी किये गये।

कोई भी ऐसा अधिकार जो प्रकृति के विरुद्ध हो, उसे सर्वानुमति से ग्रहण करने के अधिकार के अंतर्गत मानना इस तथ्य को चिह्नित करता है कि हम प्रकृति से खिलवाड़ करने में प्रवृत्त हो रहे हैं। यही नहीं, उसे हम संवैधानिक ढाँचे के अंतर्गत शासकीय मर्यादा के अन्दर चिह्नित भी कर रहे हैं। यौन संबन्धों में मानव के मूलभूत अधिकार की दुहाई देकर आपसी सहमति के आधार पर जिस प्रकार आपराधिक प्रावधानों से इसे मुक्त किया गया, वह किसी भी प्रकार एक ऐसे समाज में, जहाँ प्रत्येक के नैतिक अधिकार हैं और उसकी स्वतंत्रता भी है, उचित नहीं माना जा सकता। प्राचीन सामाजिक सिद्धान्त किसी न किसी रूप में आज भी चले आ रहे हैं, परिवार नामक संस्था उसी का एक बवलंत दृष्टांत है। परिवार की मर्यादा, परिवार का निर्माण और परिवार का निर्वाह परिवार के प्रत्येक व्यक्ति के दायित्वों में निहित है। **हमारे यहां तो विवाह का लक्ष्य ही संतानोत्पत्ति माना गया है। इसलिए पुरुषार्थ में काम एक पुरुषार्थ तो है, लेकिन यह पुरुषार्थ जहाँ धर्म (विधि) से नियंत्रित है वहीं इसका लक्ष्य मोक्ष की सिद्धि में है।** इस महानतम उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही भारत में परिवार संस्था का निर्माण किया गया।

आधुनिक भारतीय समाजशास्त्रियों ने भी परिवार के इसी महत्त्व को स्वीकार करते हुए संतानों का माता-पिता के प्रति दायित्व, समाज के प्रति दायित्व और राष्ट्र के प्रति एक नागरिक का दायित्व विवेचित किया है। जहाँ तक समलैंगिकता को मानव अधिकार और उसे अप्राकृतिक तथा विज्ञान-विरुद्ध नहीं माने जाने का तर्क दिया गया है। मुझे नहीं लगता कि उत्तर आधुनिकता के युग में हम सामाजिक मर्यादाओं से परे जाकर मानसिक विकृति को नियमों के विरुद्ध ढँक कर कोई बहुत बड़ा उपकार करने जा रहे हैं। आर्यसमाज की मान्यता है कि **''सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।''**

इसे ही महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश, व्यवहारभानु, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा अपने पत्रों में विस्तार से उल्लिखित किया है। ब्रह्मचर्यपूर्वक अपने जीवन का निर्माण करना और फिर गृहस्थ आश्रम में जाकर सामाजिक और व्यक्तिगत कर्त्तव्यों का निर्वाह करना आर्यसमाज को अभीष्ट है। इसी भाव ने जहाँ राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वहीं भविष्य में भी नैतिकता के मापदण्डों में व्यक्ति के निर्माण और उसकी

मर्यादाओं को समृद्ध करने में सदाचार और जितेन्द्रिय होने में यह विराट् दृष्टिकोण मनुष्य को बहुत दूर तक ले जाने में समृद्ध हो सकेगा। काम के प्रति निकृष्ट प्रवृत्तियों को कानूनी जामा पहनाकर भले ही न्यायपालिका ने एक अधिकार को साँचे में ढाल दिया हो, लेकिन इसे किसी भी प्रकार मानवीय जीवन और समाजिक जीवन के बीच आचरण की सुस्पष्ट कसौटी के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

संवैधानिक ऐतिहासिक विवेचन से यह स्पष्ट नहीं हो जाता कि समलैंगिकता को भारतीय संदर्भों में अधिकार दे दिया जाए, क्योंकि यह भौतिकतावादी परम्परा जब प्राचीन काल में चार्वाक ने प्रारम्भ की तब भी समाज में इसकी स्वीकार्यता नहीं थी। वेदों में आचार का विशद विवेचन है। ब्रह्मचर्यपूर्वक चरित्रनिर्माण भारतीय संस्कृति की आधारशिला रही है। वेदों, उपनिषदों, मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण में अनेक प्रमाण इस विषय में उल्लिखित हैं।

यह सर्वविदित है कि समाज में नैतिकता, सदाचार, सदाचरण इत्यादि सद्‌गुण परस्पर प्रीति को बढ़ाने में सहयोग करते हैं जबकि अप्राकृतिक और अवैज्ञानिक मान्यताओं के आधार पर केवल भोगविलास को आधार मानकर ही समलैंगिकता को प्रगतिशील माना जाए और उसे अपराध की श्रेणी से हटा दिया जाए तो इसे समाज के विनाश की दूरगामी षड्यन्त्रकारी नीति ही माना जाएगा। महर्षि दयानन्द ने पदे-पदे नैतिक आचरण पर बल देते हुए ब्रह्मचर्य आश्रम में ही नहीं अपितु जीवनपर्यन्त इस भावना को प्रदीप्त करने का निर्देश दिया और आर्यसमाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति ब्रह्मचर्य, नैतिकता, सदाचरण, को प्राकृतिक रूप से स्वीकार करती है। इसी के आधार पर मानवता का विकास होगा, श्रेष्ठ समाज का निर्माण होगा। पापाचार, दुराचार, बलात्कार, जैसे अपराधों से मानवसमाज को मुक्ति मिलने में सहयोग प्राप्त होगा।

जब हम मात्र 'काम' के उपासक बनते हैं, तो मर्यादाहीन बनते हैं। हम जानते हैं कि कामुकवृत्ति समाज में उच्छृंखलता, स्वैरता, स्वेच्छाचारिता इत्यादि को न केवल जन्म देती है, प्रत्युत उसे पालती-पोषती भी है। परिवार सृष्टिचक्र के लिए आवश्यक है, अत: उसके लिए मर्यादाएँ नियत की गई हैं। यम-यमी-सूक्त से लेकर वर्तमान तक यौनोन्मुक्तता को अस्वीकार्य माना जाता रहा है। यदि कामाचार-यौनाचार को मात्र मनोरंजन की दृष्टि से ही देखा जाने लगेगा, तो पिता-पुत्री, माता-पुत्र, भाई-बहिन इत्यादि के संबन्धों का क्या बनेगा? देश में शराब पी जाती है, धूम्रपान इत्यादि नशे किए जाते हैं, परन्तु सामाजिक दृष्टि से इन्हें कभी अच्छा नहीं माना जाता और अधिकांश लोग ऐसे व्यसनी लोगों से संबन्ध बनाने/रखने में परहेज़ करते हैं।

जहाँ तक समलैंगिकता का प्रश्न है, तो लगभग सभी मत-मतान्तर पंथ और धर्म इसका विरोध करते हैं, यह प्राकृतिक सृष्टि-चक्र/रचना के विरुद्ध है, विभिन्न संबन्धों-पिता, माता इत्यादि को निरर्थक बना देता है। इसको कानूनी मान्यता देना इसी प्रकार है जैसे घर में किसी भी प्रकार के व्यभिचार को मान लेना/या चोरी को मान्यता दे देना।

संसार में बहुविध प्रकृति के मनुष्य हैं, सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के विभिन्न अनुपातों से निर्भीक उनके मानस हैं जिनसे वे संचालित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति सामान्यत: अपने जैसे गुण-धर्म वाले प्राणियों को पसन्द करता है और उनका संघ या संगठन बनाने का प्रयत्न करता है। चोरी-डाका डालने वाले लोग इकट्ठे होकर अपना गिरोह बनाते हैं, सज्जन लोग सभा-समाज बनाते हैं। जमात, वर्ग, कक्षा, सम्प्रदाय गुणों या कर्मों के अनुसार एक लक्ष्य के लिए एकत्र हुए मनुष्यों के समूहों को दर्शाने वाले शब्द हैं। इनके उद्देश्यों और लक्ष्यों को जानते हुए जनमानस इनके संबन्ध में अपने विचार स्थिर करता है। मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, सिपाही, सैनिक ब्राह्मणादिवर्णस्थ मनुष्यों के नाममात्र से इनके गुण, धर्म, कर्मों का ज्ञान जिज्ञासु मनुष्य को हो जाता है। समाज या कानून की दृष्टि में इनमें से कुछ अपने कर्मों की दृष्टि से श्रेष्ठ माने जाते हैं और समाज या कानून की दृष्टि में पापी और अपराधी होते हैं।

सर्वोच्च न्यायालय के समलैंगिक संबन्धों के बारे में आए उक्त निर्णय के उपरान्त समलैंगिकों का समाज में क्या स्थान होगा, लोगों के मनो-मस्तिष्क में उनकी क्या छवि उभरेगी, क्या वे एक स्व-स्व समाज के सम्मान्य सदस्य माने जा सकेंगे? विद्यालयों में छोटे-छोटे विद्यार्थियों को उनके बारे में क्या बताया जाएगा? क्या इन संबन्धों को विधिक मान्यता देना परिवार नामक अनिवार्य सामाजिक संस्था को नष्ट करने का प्रयास नहीं है?

एक जागरूक समाज को प्रत्येक बुराई को निरन्तर दूर करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए, भले ही वह बुराई कितने ही बड़े रूप में प्रचलित क्यों न हो गई हो। यह संवैधानिक निर्णय है, सामाजिक और धार्मिक नहीं, अत: संघर्ष तो चलता ही रहेगा। इसलिए भी कि यह संबन्ध मात्र काम-भावना और संबन्धों (Sex) पर निर्मित हैं, और टिके हैं। इस अप्राकृतिक, अनैतिक, अधार्मिक और असामाजिक बुराई के प्रति संघर्ष हमारा कर्त्तव्य है। महाभारतकार ने कहा है-

''काम का मूल है उच्छृंखल वासना।'' - दिनेश

मृत्यु सूक्त-१५

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्या

परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां, यस्ते स्व इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि, मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्।।

हम ऋग्वेद के दशम मंडल के मृत्यु-सूक्त की चर्चा कर रहे हैं। इससे पहले इसके दार्शनिक पक्ष पर विचार किया था। इस मन्त्र का देवता मृत्यु अर्थात् इसका विषय मृत्यु है। हमने पीछे विस्तार से इसको देखा और संस्कृत साहित्य के, दार्शनिक साहित्य के जो सन्दर्भ हैं उनसे हमने इसको स्पष्ट करने की और पुष्ट करने की कोशिश की। यह प्रसंग जितना नया है उतना पुराना है और जितना पुराना है उतना नया है। आदिकाल से इसके बारे में हम देखते आए हैं, विचार करते आए हैं और आगे भी हम विचार करते रहेंगे। जो भी व्यक्ति इस संसार में आया है, प्राणी आया है, जिसका जन्म से सामना हुआ है, उसका मृत्यु से भी सामना होगा। इसमें मुख्य बात यह है कि जन्म तो मेरी इच्छा से नहीं हुआ और मेरी इच्छा मरने की भी नहीं है, लेकिन जन्म के समय के कष्ट या सुविधा या प्रसन्नता का मुझे उतना अनुभव नहीं होता, किन्तु मृत्यु की संभावना और उसका जो दुःख है उसका अनुभव मुझे बहुत होता है और इसलिए उसको सबसे बड़े दुःखों में गिना जाता है। इसलिए मनुष्य उससे भयभीत होता है। दुःख की कल्पना से ही उसे भय लगता है। इस भय का निराकरण कैसे हो? इस भय का निराकरण केवल ज्ञान से हो सकता है, क्योंकि संसार में जितना भय है, वह अज्ञान का परिणाम है। जहाँ-जहाँ हमारा अज्ञान है, जिस-जिस विषय में हमारा अज्ञान है, जितना-जितना अज्ञान है वहाँ मनुष्य उतना-उतना भयभीत है। मृत्यु से भी उसको इसलिए भय लगता है, क्योंकि मृत्यु के यथार्थ को स्वीकार नहीं कर पाता, जान नहीं पाता, सत्य नहीं मान पाता।

इस सन्दर्भ को समझाने का एक यत्न श्रीकृष्ण के द्वारा किया गया है। अर्जुन यही कहता है-यह मेरे अपने लोग हैं, मैं इनसे प्रेम करता हूँ, मैं इनको चाहता हूँ, इनको मैं कैसे मार सकता हूँ? वहाँ श्रीकृष्ण ने उसको समझाने का यत्न किया है, एक तो हमें इन्हें मारना क्यों है? हम अकस्मात् किसी को यूँ ही नहीं मार रहे हैं। संसार में जो अन्याय करता है वो स्वयं मारने में तुला हुआ है, तो बचने वाला जब उसे मारता है तो मारने के विचार से नहीं मारता, उसको अन्याय से बचाने और बचने के उद्देश्य से मारता है। यह उसकी विवशता है।

यदि कोई व्यक्ति अपराध से उपरत नहीं होता है, अपराध से दूर नहीं होता है, तो उसको अपराध से हटाने का प्रकार क्या है? कोई एक-दो व्यक्ति होते हैं तो आप उसे उस स्थान से दूर कर देते हैं। स्थान से दूर नहीं कर सकते तो कारागार के बन्धन में डाल देते हैं, जेल में डाल देते हैं। आपको यदि लगता है सुधरने की संभावना है तो दण्ड देकर छोड़ देते हैं और फिर भी लगता है कि यह अपराध भयंकर है और फिर करेगा तो आप उसे मृत्युदण्ड दे देते हैं। उद्देश्य यही होता है कि उसके अपराध से आप दूसरों को बचा सकें और स्वयं उसको भी बचा सकें। इस प्रसंग की व्याख्या करते हुए ऋषि दयानन्द ने एक बड़ा रोचक प्रकरण उठाया है सत्यार्थप्रकाश के सातवें समुल्लास में। वहाँ कहा गया है कि परमेश्वर न्यायकारी है या दयालु है? दोनों शब्द विरोधी प्रतीत होते हैं। उन्होंने समझाया कि दोनों शब्द परिणाम की दृष्टि से उतने दूर नहीं हैं जितने दूर हम समझते हैं। हम यह समझते हैं कि ये विरोधी हैं- जो न्याय करता है, वह दया नहीं कर सकता, जो दया करता है वह न्याय नहीं करता। असल में ये शब्द सापेक्ष हैं। जब हमारे मन में न्याय का भाव रहता है तो अपराधी के अपराध पर हमारी दृष्टि रहती है और उस अपराध का हम मूल्यांकन करते हैं तथा उस अपराध के अनुसार उसके दण्ड का विधान करते हैं। जब हम दया की बात करते हैं तो हमारे मन में अपराध न हो करके अपराधी रहता है, हम उसकी हानि नहीं करना चाहते या इसको दूसरे शब्दों में आप कह सकते हैं कि जो पीड़ित है वो मन में रहता है और जब दया की बात करते हैं, जब न्याय की बात करते हैं तो जो पीड़ा देने वाला है वो मन में रहता है। न्याय के समय आपकी सहानुभूति पीड़ित के साथ होती है। लेकिन यदि आप प्रयोजन देखें तो दोनों शब्द दोनों के लिए उपयोग में आते हैं। जब आप दया

करते हैं तो पीड़ित पर तो दया करते ही हैं, लेकिन अपराधी को अपराध करने से बचाकर दया भी करते हैं। जब आप दण्ड की बात करते हैं, न्याय की बात करते हैं तो उस समय अपराधी को कारागार आदि में सुरक्षित कर उसे अपराध से छुड़ाते हैं, अपराधी को उससे दूर करके पीड़ित को बचाते हैं। हमारे दोनों ही कार्यों से प्रयोजन एक ही सिद्ध होता है। इस दृष्टि से इनमें आपस में विरोध नहीं है। इसलिए जब हम किसी को मृत्युदण्ड देने की बात करते हैं तो हमारा मृत्युदण्ड देने का अभिप्राय उसको अपराध से दूर करना या उसके अपराध से पीड़ित व्यक्तियों को बचाना है।

वहाँ श्रीकृष्ण अर्जुन को यह समझा रहे हैं कि तुम युद्ध के द्वारा यह समझते हो कि वो मर जायेंगे, लेकिन यह युद्ध उचित और अनुचित के आधार पर हो रहा है, यह मेरे और तेरे के आधार पर नहीं हो रहा है। हम जो पक्षपात का भाव रख रहे हैं उसमें औचित्य नहीं है। औचित्य के आधार पर जब हम बात करेंगे तो फिर हम यह नहीं देखेंगे कि यह कौन है। उस समय हम केवल इतना देखेंगे कि इसने क्या किया है और उसके अनुसार इससे छुटकारा पाने का, पीड़ित लोगों को इससे बचाने का क्या तरीका है। जब हम यह देखते हैं कि मेरा संबन्ध इससे क्या है, मेरी निकटता क्या है, तब हम न्याय नहीं कर सकते और श्रीकृष्ण ने इन दोनों ही प्रश्नों को सामने रख कर बात कही है। पहली बात वो यह कह रहे हैं कि इनको जो दण्ड दिया जा रहा है, जो युद्ध करने के लिए हम खड़े हैं, उसका प्रयोजन है कि इन्होंने जो अन्याय किया है, इनका जो अनुचित कार्य है उसको इनसे अलग करना, अपने को उनसे बचाना, इसलिए इनको दण्ड देना अनिवार्य है।

दूसरा प्रश्न बनता है कि हम जो दंड दे रहे हैं, इससे क्या होगा? तो वे कहते हैं, हम दण्ड का पात्र नहीं बनते हैं क्योंकि जीवात्मा तो सदा रहने वाला है, मृत्यु तो मात्र उसकी एक परिस्थिति है और इसको उन्होंने समझाते हुए पहले एक दार्शनिक सूत्र समझाया है-

नासतो विद्यते भावो नऽभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।।

संसार में जिस किसी भी रूप में किसी की सत्ता है, अस्तित्व है, जिस वस्तु का होना पाया जाता है तो उस सत्ता के स्वरूप तो बदल सकते हैं, परिस्थितियाँ तो बदल सकती हैं, किन्तु अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता। अस्तित्व बना ही रहता है। यदि सारी वस्तु एक हैं तो एक रूप में बना रहेगा, लेकिन प्रारम्भ में उनकी सत्ता अलग-अलग है तो उनको निश्चित रूप से अलग-अलग ही रहना होगा। यहीं पर आकर सारे विचारों का मेल इस तरह का होता है कि लोगों को स्पष्ट नहीं हो पाता कि यह सब कुछ मिलकर एक है या अलग-अलग है। नियम क्या है? नियम यह है कि भिन्नता परिस्थिति के कारण हो सकती है, लेकिन दो विरोधी वस्तु होना उनके गुणों पर निर्भर करता है, उसकी मौलिकता पर निर्भर करता है। जो चेतना है, जीवन है और जो जड़ वस्तुएँ हैं, कहीं पर जा कर ये एक हो सकती हैं क्या? क्या ऐसा हो सकता है कि जड़ चेतन बन जाए, चेतन जड़ बन जाए। हमें लगता है कि ऐसा हो सकता है क्योंकि हम प्राणियों को देखते हैं, मनुष्यों के रूप में देखते हैं तब हमें ऐसा दिखाई देता है कि यह शरीर जड़ होने पर भी चेतन की तरह व्यवहार कर रहा है, इसलिए हो सकता है कि कहीं दोनों एक हों। लेकिन यह बात हमारी निरर्थक हो जाती है जब मनुष्य की मृत्यु होती है, प्राणी की मृत्यु होती है। तब शरीर तो पूरा का पूरा रहता है, लेकिन इसकी चेतना चली जाती है, तब पता लगता है कि ये दोनों कहीं भी मिले हुए नहीं हैं। दोनों की सत्ता प्रारम्भ से अलग-अलग है, क्योंकि सत्ता बीच में तो बन नहीं सकती, यदि शुरु से है तो अन्त तक रहेगी। यदि वह सत्ता दो हैं तो प्रारम्भ से ही दो होंगे और अन्त में भी दो होंगे। जो लोग एक से दो को मानते हैं तो चेतन को पहले मानते हैं और जो लोग चेतन को नहीं मानते हैं वो जड़ को ही अकेले को मान लेते हैं। मूल समस्या है कि यदि केवल जड़ की सत्ता स्वीकार करें तो चेतन उसमें कैसे उत्पन्न हो, कैसे प्रकट हो और क्यों नष्ट हो? उसी तरह से यदि चेतन है तो चेतन अपने को जड़ में कैसे बदल दे? हमारे सामने दो समस्यायें खड़ी हो जाती हैं। वहाँ समस्या यह आती है कि यदि चेतन है तो सदा ही उसमें चेतनता का भाव रहेगा। प्रकृति सदा जड़ता का भाव लिए रहेगी, उसमें जड़ का भाव कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि वह उसका मौलिक स्वरूप है। ऐसी परिस्थिति में दो परेशानियाँ पैदा होती हैं, दो विकृतियाँ आती हैं-एक तो यह आती है कि प्रकृति में चेतनता आ जाए और जैसे प्रकृति स्थूल बनी है सूक्ष्म से तो वैसे ही चेतन भी सूक्ष्म से स्थूल बन जाए, वो स्वरूप वाला हो जाए, साकार हो जाए किन्तु चेतन साकार नहीं हो पाता और प्रकृति चेतन नहीं हो पाती। दो परिस्थितियाँ हमको यह बता रही हैं कि यहाँ सत्ता केवल जड़ या केवल चेतन नहीं है। यहाँ सत्ता हम दोनों रूपों में देख रहे हैं और इसलिए प्रारम्भ से अंत तक इसके दो ही रूप हमें दिखाई देते हैं।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३५ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक १६, १७, १८ नवम्बर २०१८, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्गदर्शन देता रहता है, जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३५वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन १८ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार होंगे।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **षड्दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १० नवम्बर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। १६, १७, १८ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। १६ नवम्बर को परीक्षा एवं १७ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १० नवम्बर, २०१८ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हल्की ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३५वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान् एवं विशिष्ट अतिथि- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री सत्यपालसिंह-केन्द्रीय शिक्षा राज्यमन्त्री, डॉ. ब्रह्ममुनि-महाराष्ट्र, श्री सोमपाल शास्त्री- पूर्व केन्द्रीय कृषि मन्त्री, श्री अरुण कुमार 'आर्यवीर', श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, श्री प्रकाश आर्य-महू, श्री प्रियव्रतदास एवं श्रीमती शन्नो देवी-भुवनेश्वर, श्री विद्यामित्र ठुकराल-दिल्ली, श्री ओमप्रकाश गोयल-पानीपत, श्री हरिसिंह सैनी-हिसार, आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सज्जनसिंह कोठारी-लोकायुक्त जयपुर, श्री विजयसिंह भाटी-जोधपुर, श्री इन्द्रजित् देव-यमुनानगर, आचार्य विद्यादेव, डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री- रायबरेली, डॉ. रघुवीर वेदालंकार-दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, डॉ. वेदपाल-मेरठ, आचार्या सूर्या देवी-शिवगंज, आचार्या धारणा 'याज्ञिकी', आचार्या प्रियम्वदा 'वेदभारती'-आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद, श्री तपेन्द्र वेदालंकार-(रि. आई.ए.एस.) जयपुर, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि-झज्जर, श्री कन्हैयालाल आर्य-गुरुग्राम, डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी'-दिल्ली, आचार्य ओम्प्रकाश-आबूपर्वत, मा. रामपाल आर्य-प्रधान आ.प्र.स. हरियाणा, श्री उमेद शर्मा-मन्त्री आ.प्र.स. हरियाणा, डॉ. महावीर मीमांसक-दिल्ली, श्री विजय शर्मा- भीलवाड़ा, श्री दीनदयाल गुप्त-कोलकाता, श्री शत्रुघ्न आर्य-राँची, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, डॉ. जगदेव-रोहतक, डॉ. रमेशचन्द्र 'जीवन'- चण्डीगढ़, डॉ. सोमदेव 'शतांशु'-गुरुकुल काँगड़ी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, पं. रामनिवास गुणग्राहक-श्रीगंगानगर, डॉ. विनय विद्यालंकार-प्रधान आ.प्र.स. उत्तराखण्ड, डॉ. कृष्णपाल सिंह-जयपुर, डॉ. मुमुक्षु आर्य-नोएडा, पं. सत्यपाल पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	**डॉ. सुरेन्द्र कुमार**	**ओम् मुनि**
संरक्षक	**कार्यकारी प्रधान**	**मन्त्री**

कुछ तड़प–कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सिद्धान्तों का ज्ञान और सिद्धान्तनिष्ठा –गुरुकुल–विद्यालय तो बहुत बाद में खुले। आर्यसमाज के आरम्भिक काल के मूर्धन्य विद्वान्, मिशनरी और शास्त्रार्थ महारथी किसी गुरुकुल से आचार्य बनकर नहीं निकले थे। स्वामी योगेन्द्रपाल, पं. मुरारीलाल, ला. गणेशदास, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय, वज़ीरचन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी का साहित्य पढ़कर अद्‌भुत और सफल मिशनरी बन गये। वे ऐसे–ऐसे उत्तर प्रत्युत्तर देते थे कि अपने विरोधियों को निरुत्तर कर देते थे। वर्तमान के आचार्यों के पास यह क्षमता कहाँ! कुछ उदाहरण लीजिये–

देहलवी जी त्रैतवाद को सिद्ध करते हुये कहते थे, १,२ व तीन पर ही दौड़ आरम्भ होती है। मण्डी में एक, दो व तीन पर बोली समाप्त होती है। यह परम्परा से तीन अनादि पदार्थों के ज्ञान का संस्कार है।

आने में जाना व जाने में आना छिपा है। यह अवागमन की सिद्धि का अकाट्य तर्क था व है।

प्रभु की आज्ञा से पत्ता हिले न हिले, झूठे की जिह्वा तो अवश्य हिलती है। यह ''जो करता है ईश्वर ही करता व करवाता है''–उसका प्रतिवाद है।

संसार को बने पाँच छः सहस्र वर्ष नहीं हुये, सृष्टि को बिगड़े हुये पाँच छः सहस्र वर्ष हो गये हैं। ऋषि का यह घोष अटल सत्य है। यह पं. भगवद्दत्तजी कहा करते थे। हम लोगों ने इसे मुखरित नहीं किया। यदि जगत् मिथ्या है तो जगत–गुरु कहाने वाले क्या झूठ के, मिथ्या मत के गुरु हैं या झूठे गुरु हैं?

ईश्वर न्यायकारी, दयालु, कृपालु, पालक व दाता है तो जीव व प्रकृति की अनादि सत्ता स्वतः सिद्ध हो गई। वह प्रभु जीव थे तो उन्हें न्याय देता था। अनादि काल से दाता व दानी है। देने को कुछ था तो दाता था। लेने वाले भी अनादि काल से मानने पड़ेंगे। उनके बिना दया, करुणा और न्याय व भोग का क्या अर्थ?

पुरानी परम्परा के विद्वानों से कटकर ऐसे–ऐसे मौलिक तर्क देने वालों से समाज वञ्चित हो गया। वर्तमान के किसी आचार्य के मुख से ऐसे सहज, स्वाभाविक तर्क किसने सुने हैं? दर्शनों के सूत्र रटकर न कोई शान्तिप्रकाश मिला, न स्वामी योगेन्द्रपाल व पं. मनसाराम का निर्माण हुआ। दर्शन आदि का महत्त्व वैदिक ज्ञान से है, वेद का महत्त्व दर्शन आदि ग्रन्थों से नहीं है।

सोचिये! आज ठाकुर अमरसिंह, पं. शान्तिप्रकाश, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय सदृश विरोधियों के उत्तर देने को कौनसा आचार्य समाज ने पैदा किया है? सिद्धान्तों के ज्ञान व सिद्धान्तनिष्ठा में क्यों कमी आ गई है?

कुछ अलभ्य स्रोत मिले हैं– मुंशी इन्द्रमणि ने जगन्नाथ लाला के हत्थे चढ़कर जब ऋषि दयानन्द, लाला रामशरण दास व आर्यमाज के विरुद्ध विष–वमन किया, तब १३ मार्च १८८३ को आर्यसमाज मेरठ की ओर से ला. आनन्दलाल मन्त्री जी ने ''क्या कहते हैं हम इधर तो देखो'' नाम से एक आठ पृष्ठ का उत्तर प्रचारित किया था। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण document दस्तावेज का किसी जीवनी लेखक ने उपयोग नहीं किया। पं. लेखरामजी व कुछ सज्जनों ने इसे पढ़ा और लाभ भी उठाया। वर्षों की भागदौड़ के पश्चात् हमने इसे खोज निकाला है। हमें इसके पृष्ठ ४–५ नहीं मिले। उनको भी जैसे–कैसे खोजकर चैन लेंगे। इसका लाभ शीघ्र आर्यजगत् को मिलेगा।

एक और अलभ्य स्रोत हाथ लगा है– जोधपुर के श्री जगदीश सिंह जी गहलोत का उर्दू 'चाँद' के सन् १९३० में छपा उर्दू लेख हमें मिला है। इसमें मुख्य बात यह लिखी मिलती है कि महर्षि दयानन्द जी ने राजस्थान में अन्धविश्वासों के उन्मूलन व सुधार की जो लहर चलाई उसके कारण विरोधी पोंगापंथी उनकी जान लेने पर तुल गये। उनको प्राण देकर इसका मूल्य चुकाना पड़ा। स्पष्ट साक्षी है कि महर्षि रोग से नहीं मरे। उन्हें षड्‌यन्त्र रचकर मारा गया।

धौलपुर आर्य सत्याग्रह शताब्दी– आज पर्यन्त राजस्थान में या कहीं भी आर्यसमाज ने इस आन्दोलन की चर्चा तक न की। इस वर्ष इसे मनाने का सुझाव दिया तो

ऐसा लगा कि किसी भी सभा संस्था के पास इसके लिये समय नहीं। श्री लक्ष्मण जी 'जिज्ञासु' तथा श्री पं. रामनिवास 'गुणग्राहक' ने इसे मनाने पर कमर कस ली। आर्यसमाज श्रीगंगानगर ने पूरी शक्ति लगाकर अविस्मरणीय सहयोग देकर कुछ कर दिखाया। श्रद्धेय डॉ. वेदपाल जी ने वहाँ एक मार्मिक बात कही। वहाँ ७०-७२ सत्याग्रही पहुँच गये और आ रहे थे। जो आये वे प्राय: उ. प्र. के थे। राजस्थान में तो ऐसा आतंक था कि किसी ने आगे आने व कुछ कहने की हिम्मत ही न दिखाई। 'अखण्ड संग्राम' नाम से एक लघु पुस्तक छपी। कुछ सामग्री कुछ कारणों से इसमें छपने से रह गई।

भरतपुर में भी एक दिन का कार्यक्रम रखा था, परन्तु पता चल गया था कि इस क्षेत्र से कोई समाज या समाजी इसमें भाग नहीं लेगा। हमारे पीछे गुप्तचर अवश्य छोड़े गये। आर्यसमाज धौलपुर ने शोभायात्रा बहुत अच्छी निकाली। वहाँ की देवियों की श्रद्धा व उत्साह प्रशंसा योग्य था। समाज ने जो किया, जितना किया प्रशंसा योग्य है। श्री धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु तथा श्री गौरव का पुरुषार्थ सबमें उत्साह भर रहा था।

किसने भ्रमित किया?- धौलपुर जाने से पहले ही मेरे कानों में यह बात पड़ी कि धौलपुर का आर्यसमाज राजस्थान का पहला समाज है। यह सन् १८८० में स्थापित हुआ। ऋषि भी धौलपुर एक बार पधारे। कब आये? एक लेख में छपा मिला सन् १८७५ में। हमारा निवेदन है कि यह इतिहास प्रदूषण है। इसका लिखित-अलिखित कोई प्रमाण नहीं। किसी के पास कोई प्रमाण है तो लाओ। इस लेखक ने प्रमाणों की झड़ी लगाकर इस कथन को वहाँ झुठला दिया। सन् १८७५ में महर्षि जी राजस्थान से अति दूर गुजरात महाराष्ट्र में थे। सन् १८८० में आप उ.प्र. में थे। हरविलास जी सारडा और पूज्य मीमांसक जी को पढ़ा होता तो कोई ऐसी गप्प न हाँकता।

एक शङ्का का समाधान- प्रयाग से श्री श्यामकिशोर जी को किसी ने बताया कि परोपकारी में माता कलादेवी जी (उपाध्यायजी की पत्नी) को गुजरात की बताया गया है। वह यह सुनकर चौंक पड़े। चलभाष पर पूछा, यह भूल आपने कैसे कर दी? मेरे लेख को ध्यान से पढ़ा जाता तो यह भ्रम न फैलता। चलभाष पर यह शङ्का सुनकर यह समझा कि प्रूफ़ देखने में चूक हुई होगी। कोई वाक्य इधर से उधर हो गया होगा।

उस लेख में तो यह लिखा गया था कि गुजरात प्रदेश में जन्मे ऋषि दयानन्द के विश्वप्रसिद्ध विद्वान् दार्शनिक साहित्यकार पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय संसार के ऐसे प्रथम लेखक हैं जिन्होंने अपनी पत्नी कलादेवी जी की रोचक जीवनी लिखी है। कलादेवी विश्व की प्रथम समाजसेवी महिला हैं जिनके पति ने उनकी जीवन कहानी लिखी। नारी जाति के गौरव की रक्षा व वृद्धि में आर्यसमाज के योगदान को दर्शाने के लिये यह बिन्दु उठाया है। भ्रम जो उत्पन्न हो गया उसके निवारण के लिये ये पंक्तियाँ लिखी हैं। कहीं सुन-सुनाकर यह भ्रान्ति और न फैल जावे।

स्वामी श्रद्धानन्द जीवन-यात्रा- स्वामी जी महाराज के जीवन, उपलब्धियों व विचार-दर्शन पर तत्कालीन अलभ्य स्रोतों के प्रमाणों से परिपूर्ण इतिहास का अब तक का सबसे बड़ा ग्रन्थ लेखक ने स्वर्गीय क्षितीश जी वेदालंकार की प्रेरणा से लिखकर प्रकाशित करवा दिया है। प्रकाशन की व्यवस्था अमेरिका के आर्य मिशनरी श्री रमेश मल्हन तथा देवनगर के आर्य युवकों ने कर दी। ग्रन्थ का आकार बहुत बढ़ जाने से डेढ़ सौ-दो सौ पृष्ठ की सामग्री रोकनी पड़ गई। इसके प्रकाशन की भी व्यवस्था की जावेगी। वर्षा ऋतु के कारण पुस्तक कहीं भेजना कठिन था। अब प्राप्य होगी।

इसमें स्वामी जी के जीवन की, देश व आर्यसमाज के इतिहास की अनेक साहसिक घटनाओं व लुप्त-गुप्त राष्ट्रीय इतिहास का प्रथम बार अनावरण हो रहा है। स्वामीजी पर एक काँग्रेसी मौलाना के निराधार आरोपों का पहली बार सप्रमाण मुँहतोड़ उत्तर इसी ग्रन्थ में मिलेगा।

हमने यह ग्रन्थ श्रद्धा से भरपूर हृदय से 'लहू की खेती करने वाले' महाबलिदानी आर्य संन्यासी पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को समर्पित किया है। वे जन भाग्यशाली होंगे जो आर्य जाति के नर नाहर के जीवन पर लिखे इस ग्रन्थ रत्न का स्वाध्याय कर सकेंगे।

पूज्य आत्माराम जी की जीवनी- जीवन की साँझ

में यह सेवक कार्यों से खूब लादा जा रहा है। कई बार लिखा है कि जीवन के अन्तिम श्वास तक लेखनी चलाने की कामना है, परन्तु क्या लिखना है यह श्री अनिल आर्य, श्री धर्मेन्द्र 'जिज्ञासु' जी व श्री लक्ष्मण जी 'जिज्ञासु' ही के कहने पर निर्णय होगा। अकस्मात् हमारे कृपालु श्री उमेश राठी जी ने आर्य गौरव मास्टर आत्माराम जी पर मान्य ज्योत्स्ना जी द्वारा लिखवाया गया लेख पढ़कर उनका जीवन लिखने की प्रबल प्रेरणा दी तो हमें तत्काल यह कार्य आरम्भ करना पड़ा।

कभी आदरणीय पं. आनन्दप्रिय जी तथा उनकी बहिन प्रिं. सरस्वती पंडित पोरबन्दर ने भी यह इच्छा प्रकट की थी। श्रद्धेय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की भी ऐसी चाहना पूरी करवाने का यश उमेश राठी जी के प्रारब्ध में था। आपने पूज्य पं. आत्माराम जी द्वारा माहेश्वरी समाज के बन्धुओं द्वारा दी गई कुछ सामग्री भी पहुँचाई है। एतदर्थ धन्यवाद, परन्तु सबकी जानकारी के लिये बताना उपयोगी होगा कि कोई ४०-५० वर्ष पूर्व 'आर्य मुसाफिर' मासिक उर्दू में लेखक के बिना नाम के पं. गुरुदत्त जी पर एक लेख में यह पढ़ा था कि उस लेख का लेखक अपने आरम्भिक जीवन में नाम के साथ जातिसूचक 'माहेश्वरी' शब्द लिखा करता था।

पं. गुरुदत्त जी ने अपने उस भक्त शिष्य को ऐसा न करने की प्रेरणा दी। उसने तत्काल माहेश्वरी लिखना छोड़ दिया। इस सेवक ने 'आर्य गजट' में लेख देकर उस लेखक के विषय में पुराने लोगों से जानकारी माँगी। हमारा निवेदन पढ़ते ही मान्या सरस्वती पण्डितजी का पत्र आ गया कि हमारे पिताजी पहले 'माहेश्वरी' शब्द नाम के साथ जोड़ा करते थे। वह पं. गुरुदत्त जी व पं. लेखराम जी के पक्के भक्त व सच्चे शिष्य थे सो उनके कहने पर इसका लिखना छोड़ दिया।

वह माहेश्वरी परिवार में जन्मे। मूलत: राजस्थानी थे। यह तो इस जीवन में बार-बार आयेगा, परन्तु वह देश जाति के रत्न थे, आर्यसमाज का गौरव और दलितोद्धारक महात्मा थे- इसी तथ्य और पक्ष को मुख्य रखकर जीवनी लिखी जा रही है। जिसने जातीय प्रादेशिक बन्धन कड़ियाँ तोड़कर 'अमृतसरी' और 'पंजाबी' देशसेवक के रूप में पहचान बनाकर देश के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया- वह नररत्न कितना महान् था। देश के उस सपूत को फिर से माहेश्वरी बनाकर मैं उनसे अन्याय नहीं कर सकता। उनके अलभ्य लेखों व घटनाओं को उद्‌धृत करके देशवासियों को आत्माराम जी के आत्मा का दर्शन करवायेंगे।

किसको जोड़ा? क्या जोड़ा- रक्तसाक्षी पं. लेखराम ग्रन्थ पढ़ने वाले सज्जन जानते हैं कि पं. लेखराम जी कई बार बड़े-बड़े नेताओं से (यथा महात्मा मुन्शीराम, श्रीमान् रामविलास सारडा आदि) रूठ जाते थे। किस बात पर वे रूठते रहे? यही कि वैदिक धर्म पर विरोधियों के हर वार का उत्तर तत्काल क्यों नहीं दिया जाता। पं. बुद्धदेव जी के मुख से कभी सुना था-

ज़रा छेड़े से मिलते हैं, मिसाले ताले तम्बूरा।
बजा ले जिसका जी चाहे, मिला ले जिसका जी चाहे।।

इस सोच व व्यवहार के कारण आर्यसमाज ने पं. देवप्रकाश जी को खींचा। पं. मेधातिथि जैसा मूर्धन्य इस्लामी विद्वान् पं. शान्तिप्रकाश जी ने वैदिक धर्म के रंग में रंग दिया। मौलाना सनाउल्ला जी ने बद्रोमल्ली के शास्त्रार्थ में युवा अमरसिंह ठाकुर से शास्त्रार्थ करते हुये कहा था, ''जब मैं आर्यसमाज के मञ्च से बोलता हूँ तो मुझे ऐसा अनुभव होता है कि मैं एक विश्वविद्यालय में बोल रहा हूँ।''

आज हर कोई आर्यसमाज में विशेषणों से विभूषित होकर बोलता व लिखता है, परन्तु किसी को आर्यसमाज से जोड़ पाये? किस विधर्मी को खींचा? किसे प्रभावित किया? मुसलमानों ने आचार्य बलदेव जी से मेरी एक पुस्तिका छपवाने की अनुमति माँगी। श्रीयुत् आचार्य जी से कहा, महाराज आप मेरे बिना पूछे भी उन्हें प्रकाशित करने की अनुमति दे देते तो मैं आपके कथन पर मुहर ही लगाता। इससे पूर्व भी श्री जयगोपाल जी आर्य पानीपत के अनुमोदन से उन्हें यह पुस्तक छपवाने की अनुमति दी थी। इससे आर्यसमाज का गौरव बढ़ेगा इसलिये इस विनीत ने अविलम्ब स्वीकृति दी।

यह घटना आर्यसमाज में आज अपवाद है, परन्तु आर्यसमाज में इसकी चर्चा कौन करता है? डॉ. शहरयार

शीराज़ी की इच्छा व प्रेरणा से पूज्य पं. रामचन्द्र जी देहलवी पर ४०० पृष्ठ का ग्रन्थ अजय जी को प्रकाशनार्थ दे दिया। आर्यसमाज में किसने इसे ऋषि मिशन की शान व मान समझकर इसका मूल्याङ्कन किया? भक्त रामशरणदास जी और पं. गंगाप्रसाद शास्त्री ऋषि दयानन्द के प्रशंसक और देहलवी जी के भक्त थे। आज हर कोई (संन्यासी वेशधारी भी) राजनेताओं के चक्कर काट रहे हैं। कौन पूछता व पूजता है? हम दूसरों को जोड़ नहीं रहे। वह सोच ही नहीं।

महादेव गोविन्द रानाडे- कई बड़े-बड़े नेता तथा उच्च पदों पर आसीन किसी न किसी प्रयोजन से ऋषि के निकट आये। वैदिक धर्म ने तो उनमें प्रवेश न किया। महादेव गोविन्द रानाडे प्रार्थनासमाजी ही रहे। ऋषि को पूना में सहयोग तो किया, परन्तु आर्यसमाज से दूर-दूर ही रहे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने समय-समय पर उनके विचित्र विचारों पर खरी-खरी प्रतिक्रिया भी दी। उनके ग्राम में आर्यसमाज मैंने न पाया। पूना में बना हुआ समाज टूट गया। हमारे लोगों ने फिर भी जो रट रखा है वही उगल रहे हैं। गाँधी जी का गुरु गोखले था। गोखले के गुरु महादेव थे और महादेव के गुरु ऋषि दयानन्द थे। इस द्रविड़ प्राणायाम को हम क्या समझें?

ला. पिण्डीदास (ज्ञानी पिण्डीदास और थे) और मेहता श्री आनन्द किशोर दोनों जाने-माने क्रान्तिकारी व सिद्धान्तनिष्ठ आर्यपुरुष थे। कुछ सज्जन इनका तो नाम व काम नहीं जानते, परन्तु अपने मनपसन्द विषय आर्यसमाज की स्वराज्य संग्राम को देन में व्यर्थ के नाम आर्यसमाज से जोड़ देते हैं। कल्पित कहानियों से बचना ही ठीक है।

लो! काम बन गया- यह लेख अभी पूरा नहीं हुआ था कि श्री मन्त्री जी ने सूचना दी कि श्री मनोज शारदा जी ने उनकी प्रेरणा से बड़ौदा से पूज्य आत्माराम जी के वंशजों से जीवनी के लिये उपयोगी ठोस सामग्री (मूल स्रोत) मँगवा दिये हैं जो कुछ ही दिन में लेखक को प्राप्त हो जायेंगे। यह सहयोग इस परिवार के आर्यत्व का प्रकाश करता है। उन्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूँ?

अब इस जीवनी की प्रामाणिकता व स्तर पर निश्चय ही आर्य जाति गौरव करेगी। यह जीवनी बहुत पहले छप जानी चाहिये थी। **चलो! सहज पके सो मीठा होवे।**

नहीं कोई भी चाहना और दिल में- कुँवर सुखलाल जी के एक प्रसिद्ध पद्य की दूसरी पंक्ति कुछ बदलकर प्रभु से कहता हूँ-

नहीं कोई भी चाहना और दिल में
जो तू चाहता है वही चाहना है

जीवन में अब मान प्रतिष्ठा, माया व माल की न कोई चाहना है, न लालसा! प्यारे प्रभु की प्रेरणा से धर्मप्रचार के लिये जो कुछ मेरे बस में है, किये जा रहा हूँ। हाथ में लिया कोई काज अधूरा न रह जावे, अब ईश्वर से यह भी नहीं कहना चाहता। जिनको मेरी लेखनी से लगाव है, जिन्हें इससे प्रेरणायें प्राप्त होती हैं उनका आभार मानता हूँ। भाग-दौड़ का समय बीत गया, परन्तु कार्य करते-करते थकता नहीं, ऊबता नहीं। यह भी प्रभु की कृपावृष्टि है। यह बड़ों के आशीर्वाद का प्रसाद मानता हूँ।

ऋषि दयानन्द ने कहा था

विद्वान् एकमत हो प्रीति से वर्तें

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़, सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें-वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों (साधारण जनों) में विरोध बढ़कर अनेकविध दु:ख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।

(स. प्र. भू.)

ओ३म्

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) पिन. ३०५००१ दूरभाष– ०१४५–२४६०१६४

वेदगोष्ठी–२०१८

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध–पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध–पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत ३० वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। अब तक निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा चुका है:–

१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली।	**१२ नवम्बर, १९८८**
२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग।	**०५ नवम्बर, १९८९**
३. अथर्ववेद समस्या और समाधान।	**२७ नवम्बर, १९९०**
४. वेद और विदेशी विद्वान्।	**१६ नवम्बर, १९९१**
५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप।	**०१ नवम्बर, १९९२**
६. वेदों के दार्शनिक विचार।	**२८ नवम्बर, १९९३**
७. सोम का वैदिक स्वरूप।	**१२ नवम्बर, १९९४**
८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान।	**०३ नवम्बर, १९९५**
९. वैदिक समाज व्यवस्था।	**०१ नवम्बर, १९९६**
१०. वेद और राष्ट्र।	**२४ अक्टूबर, १९९७**
११. वेद और विज्ञान।	**०९ अक्टूबर, १९९८**
१२. वेद और ज्योतिष।	**१० नवम्बर, १९९९**
१३. वेद और पदार्थ विज्ञान	**०३ नवम्बर, २०००**
१४. वेद और निरुक्त	**१८ नवम्बर २००१**
१५. वेद में इतिहास नहीं	**०१ नवम्बर २००२**
१६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	**३१ अक्टूबर २००३**
१७. वेद में शिल्प	**१९ नवम्बर २००४**
१८. वेदों में अध्यात्म	**११ नवम्बर, २००५**
१९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन	**२७ नवम्बर, २००६**
२०. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है	**१६ नवम्बर, २००७**
२१. वैदिक समाज विज्ञान	**०५ नवम्बर, २००८**
२२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद	**२३ अक्टूबर, २००९**
२३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद	**१२ नवम्बर, २०१०**
२४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद	**०४ नवम्बर, २०११**
२५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्यः वैदिक परिप्रेक्ष्य	**१६ नवम्बर, २०१२**
२६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास	**८ नवम्बर, २०१३**
२७. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	**३१ अक्टू. १,२ नव., २०१४**
२८. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	**२०,२१,२२ नव., २०१५**
२९. दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता	**४,५,६ नव., २०१६**
३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त	**२७,२८,२९ अक्टू., २०१७**

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१८ के लिए निर्धारित विषय

षड्दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द

उपशीर्षक :

०१. वेदों में दर्शन तत्त्व की विवेचना

०२. वेदों में षड्दर्शनों के मूलतत्त्व की मीमांसा

०३. महर्षि दयानन्द के चिन्तन में षड्दर्शनों की वेदमूलकता

०४. षड्दर्शनों में ईश्वर-विचार और उनकी वेदमूलकता

०५. षड्दर्शनों में प्रमाण-विचार और महर्षि दयानन्द

०६. षड्दर्शनों में जगत् का सम्प्रत्यय और उसकी वेदमूलकता

०७. षड्दर्शनों में जीव सिद्धान्त या जीवात्मा का सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द

०८. षड्दर्शनों की वेदमूलकता और मुक्ति विचार के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द

०९. षड्दर्शनों की वेदमूलकता प्रत्यक्ष प्रमाण के सन्दर्भ में- एक विवेचना

१०. षड्दर्शनों में अनुमान प्रमाण की वेदमूलकता का समीक्षात्मक विशेषण

११. षड्दर्शनों में बन्धन का सिद्धान्त और वेदमूलकता

१२. वेदों के सन्दर्भ में षड्दर्शनों की प्रमुख मान्यताएँ और महर्षि दयानन्द

१३. षड्दर्शनों में मोक्ष प्राप्ति के साधन और महर्षि दयानन्द

१४. षड्दर्शनों में सत् के स्वरूप की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द

१५. षड्दर्शनों में कर्म सिद्धान्त और महर्षि दयानन्द

१६. षड्दर्शनों में पदार्थ विवेचन और महर्षि दयानन्द

१७. षड्दर्शनों में ब्रह्म एवं जीव सम्बन्धों की विवेचना की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द

१८. षड्दर्शनों के समन्वय की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द

१९. षड्दर्शनों में वेद विचार और महर्षि दयानन्द

२०. षड्दर्शनों में त्रैतवाद की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द

२१. महर्षि दयानन्द के अनुसार षड्दर्शनों का समन्वय

२२. वैशेषिक दर्शन की वेदमूलकता

२३. न्याय दर्शन की वेदमूलकता

२४. सांख्य दर्शन की वेदमूलकता

२५. योग दर्शन की वेदमूलकता

२६. मीमांसा दर्शन की वेदमूलकता

२७. वेदान्त दर्शन की वेदमूलकता

२८. वेदान्त दर्शन में वर्णित ब्रह्म के स्वरूप की वेदमन्त्रों से पुष्टि।

सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ

०१. षड्दर्शन समन्वय- श्री प्रशान्त आचार्य

०२. आचार्य उदयवीर शास्त्री का षड्दर्शन भाष्य एवं विवेचना ग्रन्थ

०३. योग दर्शन भाष्य-पं. राजवीर शास्त्री

०४. स्वामी ब्रह्ममुनि के दर्शन भाष्य

०५. स्वामी दर्शनानन्द जी के दर्शन भाष्य

०६. भारतीय दर्शन (दो भाग)- डॉ. राधाकृष्णन्

०७. महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त ग्रन्थ

०८. दर्शन तत्त्व विवेक- आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

०९. षड्दर्शन समन्वय-पं. विद्यानन्द शर्मा

१०. भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण- एम. हिरियन्ना

११. भारतीय दर्शन-एस.एन. दासगुप्त

१२. भारतीय दर्शन-दन्त एवं चटर्जी

१३. भारतीय दर्शन- एन.के. देवराज

१४. भारतीय दर्शन-जी.डी. शर्मा

१५. भारतीय दर्शन-उमेश मिश्र

१६. भारतीय दर्शन-बलदेव उपाध्याय

१७. सिक्स सिस्टम ऑफ इण्डियन फिलॉस्फी- एफ. मैक्समूलर

१८. रिचर्ड गार्वे- सांख्य फिलॉस्फी

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

ऐतिहासिक कलम से....

देव दयानन्द का ऋषित्व

जगदेवसिंह सिद्धान्ती

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।। ऋग्वेद ५.८२.५।। तथा यजुर्वेद ३०.३।।

उपर्युक्त मन्त्र को ऋषि दयानन्द ने अनेक स्थानों के लिये विनियुक्त किया है। जैसे-

१. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में मन्त्रभाष्य के ईश्वर-प्रार्थना-विषय के आरम्भ में

२. उक्त भाष्य की समाप्ति और वेदभाष्य की प्रतिज्ञा के आरम्भ में

३. ऋग्वेद-भाष्य के प्रत्येक मण्डल, अष्टक और अध्याय के आरम्भ में

४. यजुर्वेद भाष्य के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में, विशेष ऋग्वेदभाष्य में उक्त मन्त्र का पता ऋग्वेद, मण्डल ५, सूक्त ८२, मन्त्र ५ तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के दोनों स्थलों तथा यजुर्वेदभाष्य में- यजु:, अध्याय ३०, मन्त्र ३, का दिया है।

५. संस्कार विधि के ''ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना'' प्रकरण के प्रारम्भ में, विशेष-जहाँ-जहाँ भी संस्कारों की पद्धति में 'ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना' प्रकरण दिया गया है वहाँ-वहाँ ही प्रथम उक्त मन्त्र से आरम्भ होता है।

६. संस्कार विधि के गृहाश्रम प्रकरण में ''अग्निहोत्र'' के मन्त्रों में।

७. सत्यार्थप्रकाश-तृतीय समुल्लास के दैनिक यज्ञ प्रकरण में- अधिक आहुति देना हो तो-''विश्वानि देव... आसुव'' यजु:. अ. ३०, मं. ३, इस मन्त्र और पूर्वोक्त गायत्री मन्त्र से आहुति देवें।

अब ऋषि दयानन्दकृत इस मन्त्र के अर्थों को पढ़िये और मनन कीजिये-

क- ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में-

भाष्यम् -हे सच्चिदानन्दस्वरूप! हे परमकारुणिक! हे अनन्तविद्य! हे विद्याविज्ञानप्रद (देव)! हे सूर्य्यादि-सर्वजगद्विद्याप्रकाशक! हे सर्वानन्दप्रद! (सवित:) हे सकलजगदुत्पादक! (न:) अस्माकम् (विश्वानि) सर्वाणि (दुरितानि) दु:खानि सर्वान् दुष्टगुणांश्च (परासुव) दूरे गमय, (यद्भद्रम्) यत्कल्याणं सर्वदु:खरहितं सत्यविद्याप्राप्त्याऽभ्युदयनि:श्रेयस्सुखकरं भद्रमस्ति (तन्न:) अस्मभ्यम् (आसुव) आ समन्तादुत्पादय कृपया प्रापय।

भावार्थ- हे सत्यस्वरूप! हे विज्ञानमय! हे सदानन्दस्वरूप! हे अनन्तसामर्थ्ययुक्त! हे परमकृपालो! हे अनन्तविद्यामय! हे विज्ञानविद्याप्रद! (देव) हे परमेश्वर! आप सूर्यादि सब जगत् का और विद्या का प्रकाश करने वाले हो तथा सब आनन्दों के देने वाले हैं, (सवित:) हे सर्वजगदुत्पादक सर्वशक्तिमन्! आप सब जगत् को उत्पन्न करने वाले हैं, (न:) हमारे (विश्वानि) सब जो (दुरितानि) दु:ख हैं उनको और हमारे सब दुष्ट गुणों को, कृपा से आप (परासुव) दूर कर दीजिये अर्थात् हमसे उनको और हमको उनसे सदा दूर रखिये, (यद्भद्रम्) और जो सब दु:खों से रहित कल्याण है, जो कि सब सुखों से युक्त भोग है, उसको हमारे लिए सब दिनों में प्राप्त कीजिये। सो सुख दो प्रकार का है एक जो सत्यविद्या की प्राप्ति में अभ्युदय अर्थात् चक्रवर्त्ति राज्य, इष्ट, मित्र, धन, पुत्र, स्त्री और शरीर से अत्यन्त उत्तम सुख का होना और दूसरा जो नि:श्रेयस सुख है कि जिसको मोक्ष कहते हैं और जिसमें ये दोनों सुख होते हैं उसी को भद्र कहते हैं (तन्न आसुव) उस सुख को आप हमारे लिए सब प्रकार से प्राप्त करिये।

विशेष- ऋग्वेदभाष्य और यजुर्वेद भाष्य में उपर्युक्त भूमिका-भाष्य में दिए गए अर्थ का संक्षेप है, क्योंकि भूमिका में विस्तृत अर्थ दिया जा चुका है।

ख- संस्कारविधि कर्मकाण्ड का प्रतिपादक ग्रन्थ है, इसलिए उसमें दिए गए अर्थ को नीचे देते हैं-

हे (सवितः)। सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त (देव) शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को (परा सुव) दूर कर दीजिए। (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, (तत्) वह सब हमको (आसुव) प्राप्त कीजिए।।

विशेष- यह अर्थ भूमिका के अर्थ के कर्मकाण्डपरक भाव का प्रकाश करता है।

विचार सरणि

आर्यजगत् में ''गायत्री' तत्सवितुः को बहुत महत्त्व प्राप्त है और यह ठीक ही है, परन्तु इस ''विश्वानि देव'' मन्त्र के महत्त्व पर कम ध्यान दिया गया है, परन्तु ऋषि दयानन्द ने इसके महत्त्व को यथार्थ रूप में स्थान दिया है।

ऋग्वेद में मण्डल, अष्टक और अध्यायों का विभाजन अर्थपूर्ण है और परस्पर संगति का द्योतक तथा गुणत्रयी के स्वरूप का प्रकाशक है। इसी भाव को समझाने के लिये प्रत्येक मण्डल, अष्टक और अध्याय के भाष्य के आरम्भ में इस मन्त्र का विनियोग किया जो कि मन्त्रार्थ से सिद्ध है। यही बात यजुर्वेद के चालीसों अध्यायों, विभाग और परस्पर संगति को प्रकट करती है। इसीलिए यजुर्वेद में भी प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में इस मन्त्र का प्रयोग ऋषि ने किया है।

आर्यों के लिये शुभ सूचना

'कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर' छपने के लिये तैयार

कुछ समय पूर्व 'परोपकारी' में सूचना प्रकाशित हुई थी कि पं. लेखराम आर्य मुसाफ़िर के साहित्य 'कुल्लियाते आर्य मुसाफ़िर' को परोपकारिणी सभा प्रकाशित करने जा रही है। इस सूचना को पढ़कर आर्यजगत् में उत्साह का संचार होना स्वाभाविक ही था, जिसके परिणामस्वरूप इस ग्रन्थ को छापने के लिये कई साहित्यप्रेमियों ने सभा को सहयोग भी किया, परन्तु पंडित लेखराम जैसे नाम पर यह सहयोग पर्याप्त मालूम नहीं हुआ। पंडित लेखराम वह नाम है जिसके वैदिक-ज्ञान के सामने विरोधी काँपते थे। ऐसे सिद्धान्तमर्मज्ञ ने अपनी संचित ज्ञान-राशि को लेखबद्ध किया और इस लेखबद्ध ज्ञानराशि को यति शिरोमणि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एकत्रित किया और एक ग्रन्थ निर्मित हुआ, जिसका नाम था 'कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर'। यह ग्रन्थ दो भागों में प्रकाशित हुआ। वर्त्तमान में यह ग्रन्थ दुर्लभ हो गया था। परोपकारिणी सभा ने इसे पुनः प्रकाशित करने का निर्णय लेकर पं. लेखराम को पुनर्जीवित कर दिया है। हमने लेखराम का गुणगान ही सुना है, उनके जीवन को ही पढ़ा है, पर वह इस उच्च पदवी को कैसे पा गये- इसकी सच्ची खबर तो उनके लिखे पन्ने ही बता सकते हैं। इन पन्नों को किताब रूप में छापने के लिये जैसा उत्साह, जैसी उमंग दिखनी चाहिये थी, उसमें अभी न्यूनता ही नज़र आती है।

अब यह ग्रन्थ छपने के लिये प्रेस में भेजा जा रहा है। अच्छे कार्यों का सदैव प्रोत्साहन होना चाहिये, इस दृष्टि से इस पुस्तक में **११०००/-रु.** का सहयोग करने वालों के नाम प्रकाशित किये जायेंगे। **एक लाख रु.** से अधिक का सहयोग करने वालों का चित्र सहित आभार व्यक्त किया जायेगा।

आइये, महर्षि दयानन्द के मिशन के लिये अपना जीवन देने वाले आर्यपथिक पं. लेखराम को केवल शब्दों से याद न करके उन्हें पुनर्जीवित करने में भरपूर उत्साह से सहयोग करें।

ओम्मुनि

मन्त्री, परोपकारिणी सभा

१५ सितम्बर जिनकी पुण्यतिथि है...

काश! कोई उन्हें भी याद रखता-३
(पं. नारायण प्रसाद बेताब)

प्रभाकर

पिछले अंक का शेष भाग....

पिछले दो अंकों में हमने पं. नारायण प्रसाद 'बेताब' से जुड़ी घटनाओं पर पर्याप्त चर्चा की है। इस लेख में हमारी यह पूरी कोशिश रही है कि बेताब के बारे में वो बताया जाये, जो सामान्य रूप से अनुपलब्ध है। वैसे तो आज आर्यसमाज में 'बेताब' पूरे-पूरे ही अनुपलब्ध हैं। उनका नाम और काम दोनों ही गायब हैं, पर जो बचा है, वह भी कम प्रेरणादायी नहीं है। खैर, जो बीत गया, उस पर क्या शोक करें, जो बचा है उसे सँवारने की सोचें। तो हम बात कर रहे थे 'बेताब' जी से जुड़े कुछ रोचक किस्सों की।

सन् १९२७-२८ में एक अमेरिकन महिला **केथरीन मेयो** आई, जो कि मिस मेयो के नाम से जानी जाती थी। उसने भारत का भ्रमण किया और एक किताब लिखी-**'मदर इण्डिया'**। भारत की जितनी बुराइयाँ वह देख पाई, सबको इस किताब में सविस्तार परोस दिया। पढ़ने वालों का कहना था कि लगता है मिस मेयो केवल भारत की बुराइयाँ देखने ही आई थीं, क्या उन्हें यहाँ एक भी अच्छाई नहीं दिखी?

कुछ ने कहा कि 'मदर इण्डिया' में गलत क्या लिखा है? भारत में गन्दगी है, तो है। रेल की पटरियों से लेकर बस्ती की गलियों तक सब कचरे का ढेर ही तो है। दूसरी तरफ ऐसे भी लोग थे जिन्हें यह किताब भारत के लिये आइना कम, तमाचा ज्यादा लग रही थी। भारत का ऐसा साहित्यिक अपमान राष्ट्रभक्तों को सहन नहीं हुआ। होता भी क्यों? भारत का पतन हुआ है ये तो सब मानते हैं, पतन न होता तो भारत मिस मेयो की कौम का गुलाम ही क्यों होता? पर क्या एक भी अच्छाई नहीं...? कोई मेरा हितैषी बनकर मेरी कमियाँ गिनाये तो मेरा नाराज़ होना जायज़ नहीं रह जाता, पर अगर भावना अपमान करने और नीचा दिखाने की हो तो कौन स्वाभिमानी सहेगा? जब भारत गुलाम है, स्वतन्त्रता आन्दोलन जोरों पर है, ऐसे में एक अंग्रेज महिला आकर कहती है कि तुम गुलाम ही रहो, क्योंकि तुम तो असभ्य हो, नीच हो, आजादी पाने का तुम्हें अधिकार नहीं। इस किताब में मिस मेयो नूर मोहम्मद के एक भाषण को उद्धृत करते हुए कहती है-''जब तक तुम एक इन्सान को पानी पीने देने से भी इन्कार करते हो, जब तक तुम उन्हें स्कूल में भी पढ़ने नहीं देते तो तुम्हें क्या अधिकार है कि अपने लिये अधिक अधिकारों की माँग करो? जब तक तुम एक इन्सान को समान अधिकार देने से भी इन्कार करते हो, तो तुम अधिक राजनीतिक अधिकार माँगने के कैसे अधिकारी बन गये?'' यह भाषण नूर मोहम्मद ने १९२६ की बम्बई काउन्सिल में दिया था, उन्होंने काँग्रेस द्वारा अंग्रेजी हुकूमत से की गई राजनैतिक अधिकारों की माँग को अनुचित बताया था। साथ ही इस किताब ने भारत में जाति के नाम पर बढ़ते आपसी विरोध को खूब हवा दी। फलस्वरूप इस किताब का जमकर विरोध किया गया।

लाला लाजपत राय ने तो इसे 'गटर इन्सपेक्टर रिपोर्ट' करार दे दिया। पर कलम का जवाब तो कलम ही होता है सो लाला जी ने इसका प्रत्युत्तर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **''दु:खी भारत- मिस कैथरीन मेयो की मदर इण्डिया का उत्तर''** में दिया। यह पुस्तक १९२८ में ही 'इन्डियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग' से प्रकाशित हुई। पुस्तक के समर्पण में लिखी लाला लाजपत राय जी की चार पंक्तियाँ स्वतन्त्रता को लेकर जितनी मार्मिक है उतनी ही तार्किक भी।

पाठक सोच रहे होंगे कि इस रामायण का बेताब से क्या लेना-देना? दरअसल किताब का विरोध तो खूब हुआ और लाला जी ने विरोध में नई किताब भी लिख दी, पर आमजन में अपनी जननी भारतभूमि के प्रति श्रद्धा और स्वाभिमान कैसे भरा जाय? तब लाला लाजपत राय की प्रेरणा से बेताब साहब ने कलम थामी और इस किताब के बजवाब नाटक लिखा **'कुमारी किन्नरी'**। नाटक में मिस मेयो को खूब तहजीब से जवाब दिया गया। इतिहास में पहली बार किसी आक्षेप का जवाब नाटक लिखकर दिया गया। नाटक में एक गीत लिखा, जो कि बहुत सराहा गया-

बहारेगुल को बुलबुल ही खुशी से देख सकती है,
हमेशा चील तकती है तो मुरदारों को तकती है।
शराबी ढूँढ लेता है जहाँ होता है मयखाना,

सूए दहरो-हरम जाते हैं जिनके दिल में भक्ति है।
हवनकुण्डों को देखेगा ना दारोगा सफाई का,
फ़कत कूड़े के ढेरों पर नज़र उसकी लपकती है।
शिवालय और मस्जिद के खुले हैं गो कि दरवाजे,
कुमारी किन्नरी लेकिन वहाँ जाते झिझकती है।

यह नाटक कलकत्ते में उस वक्त खेला गया, जब काँग्रेस का अधिवेशन हो रहा था और पं. मोतीलाल नेहरू सभापति थे। बेताब का यही तरीका था, जवाब देने का। बिना तोड़-फोड़ के मरम्मत कर देते थे। वह खुद भी कहते हैं-

नाटक द्वारा करो सफाई इन निर्मूल कलंकों की,
यही मन्त्र है परम औषधि इन बिच्छू के डंकों की।।

'बेताब' ने ऋषि दयानन्द और वैदिक साहित्य पर भी लिखा, पर अब वह दुर्लभ या अप्राप्य है। उन्होंने भर्तृहरि के तीन शतकों का अनुवाद भी किया। वे डी.ए.वी. में अवैतनिक रूप से धर्मशिक्षक भी रहे।

तकनीक का युग आया, नाटकों की जगह फिल्मों ने ले ली। तब बेताब ने कई फिल्में और गीत लिखे। १९३१ में पहली फिल्म **देवी देवयानी** लिखी, उसके बाद यह सिलसिला जारी ही रहा। १९३३ में उन्हें अर्धांग रोग हुआ तब ३ साल बाद रणजीत मूवीटोन कम्पनी ने उनकी सुध ली और एक हजार मासिक भत्ता देना शुरु किया। बेताब थे स्वाभिमानी, कृतज्ञ और विनम्र भी। सो इस भत्ते पर उनकी प्रतिक्रिया थी कि "वो अपने बूढ़े और लूले-लंगड़े बैल को खूंटे से बाँधकर भूसा दे रहे हैं।" लेखन के क्षेत्र में बेताब का क्या दर्जा था, इसका सहज अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि १९३४-३५ में 'नाटक सम्राट' के नाम से प्रसिद्ध मुन्शी प्रेमचन्द जब फिल्मों में लिखने के काम के लिये मुम्बई गये तो उन्हें कम्पनी की तरफ से आठ हजार वार्षिक वेतन दिया गया, मतलब लगभग साढ़े छ: सौ रु. मासिक और बेताब साहब को बिना काम के हजार रुपये मासिक भत्ता, यानि बेताब जी से एक-तिहाई कम। पर आर्यसमाज अपने कई रत्नों को भूल चुका है। यह दोष किसको दें? आज के समाज को, जो उन्हें नहीं जानता या उनको, जिन्होंने उसे सुरक्षित नहीं किया?

कलम चाहती है कि अभी और लिखे, बेताब साहब की तारीफ में कुछ पन्ने और भी सजाएँ जाएँ, पर कलम मजबूर है। पाठक सोच रहे होंगे कि पत्रिका के तीन अंक तक यह लेख पढ़ा, पर नारायण प्रसाद बेताब का सिलसिलेवार जीवन कहीं दिखाई न दिया, तो पाठक महानुभाव! इस मामले में बेताब साहब की कलम पहले ही चल चुकी है। बेताब साहब ने अपना जीवन चरित स्वयं लिखा है-**'बेताब चरित'** और ऐसा लिखा है कि एक बार पढ़ना शुरू कर दो तो नज़र किताब के आखिरी पन्ने पर जाकर ही दम लेती है। पुस्तक की २४ वीं मंजिल (अध्याय) आर्यसमाज और उसके सिद्धान्तों को समर्पित है। यहाँ पर यम-नियम और धर्म के दस लक्षणों की जो व्याख्या की गई है, वह केवल बेताब ही लिख सकते है। इन यम-नियम और धर्म के लक्षणों से अपने जीवन को तोलते हुए वे जैसे थे, अपने को वैसा ही लिख दिया। अपनी बुराइयों को ज्यों का त्यों लिख दे ऐसा तो स्वामी श्रद्धानन्द की परम्परा का और महर्षि दयानन्द का अनुयाई ही कर सकता है।

'बेताब' जी ने और क्या-क्या लिखा, उसमें कितना लुप्त हो चुका है, कितने के मिलने की सम्भावना है-यह पूरी सूची **'बेताब चरित'** पुस्तक के अन्त में मिल जायेगी। आर्य पुरोहित प्राय: विवाह संस्कार के अन्त में जो गीत भावुक हृदय से गाते हैं-

"सुते, लोग कहते हैं यह शुभ घड़ी है।
घड़ी शुभ तो है कष्टदायक बड़ी है।।"

यह भी बेताब जी की ही रचना है, इसका आनन्द भी पुस्तक को पढ़कर ही मिलेगा। यह लेख तो मात्र इसलिये लिखा गया है कि आर्यजन् उत्सुक हो उठें इस कलाकार के बारे में जानने के लिये। अगर ये उत्सुकता पैदा होती है तो कागज़ पर पड़ी यह स्याही सार्थक होगी।

हमने तो सरोवर से कुछ बूँदें लाकर प्यास पैदा की है, जो अब सरोवर में जाकर ही बुझेगी। अगर इस पिपासा को यहीं शान्त कर दिया जाता तो पाठकगण उस मधुर जल से परिपूर्ण, रम्य, मनोहारी सरोवर से वंचित ही रह जाते। यह पाप हम अपने सर कैसे लें? अत: हमारा उद्देश्य तो सरोवर तक ले जाना है। पाठक! अब जी भर-कर अमृतपान करना, मन करे तो डुबकियाँ लगाना, जितना चाहे उतनी लगाना। पुस्तक का नाम और प्राप्ति का पता देते हुए हम विदाई चाहते हैं। इति!

पुस्तक का नाम : बेताब चरित

प्रकाशक : राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मण्डी हाऊस मेट्रो स्टेशन के पास, नई दिल्ली-११०००१

धौलपुर आर्य सत्याग्रह शताब्दी समारोह : एक झलक!

रामनिवास 'गुणग्राहक'

पिछले अंक का शेष भाग....

भरतपुर का कार्यक्रम 'अभिनन्दन मैरिज होम' में रखा गया। १७ अगस्त को जिला सभा के पदाधिकारियों के साथ प्रात:काल व्यवस्था सम्बन्धी बैठक हुई। सबसे पहले आने वालों में आर्यसमाज श्रीगंगानगर के ६ सदस्यीय दल के साथ राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी थे। सायं ५ बजे लक्ष्मण जी डॉ. वेदपाल जी को लेकर आ गए। परोपकारिणी सभा अजमेर से मन्त्री ओम्मुनि जी, माता ज्योत्स्ना जी और सोमेश पाठक जोधपुर से श्री गौरव आर्य व श्री दुर्गेश सोनी तथा फरीदाबाद से श्री धर्मेन्द्र 'जिज्ञासु' भी आ गये। आर्य प्रतिनिधि सभा जयपुर से आर्यवीर दल के ५-६ युवक भी कार्यक्रम के सहभागी बने। प्रात:काल यज्ञ के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिला सभा भरतपुर के उपप्रधान मानसिंह जी, ऊँचा नगला ने यज्ञ की सम्पूर्ण सामग्री प्रदान की। उनके पिता भामाशाह श्री भगवानसिंह जी सपत्नी मुख्य यजमान बने। यज्ञ श्री रामनिवास 'गुणग्राहक' ने कराया तथा भजनों की प्रस्तुति कुमारी श्रुतकीर्ति (भुसावर) ने दी। प्रसाद वितरण के बाद मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ बड़े मंच पर प्रभु भक्ति के भजन के साथ हुआ। धौलपुर सत्याग्रह की रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए आ. ओम्प्रकाश को मंच पर बुलाने से पूर्व सभा की अध्यक्षता के लिए श्रद्धेय डॉ. वेदपाल जी मंचासीन हुए। जिला सभा भरतपुर ने उनका माल्यार्पण व शॉल द्वारा सम्मान किया। मुख्य अतिथि श्री पुष्कर जी एस.डी.एम. भरतपुर तथा मुख्य वक्ता राजेन्द्र जी जिज्ञासु सहित श्री ओम्मुनि जी, माता ज्योत्स्ना धर्मवीर जी आदि सब मंचासीन अतिथियों का जिला सभा ने विधिवत् स्वागत किया। आ. ओम्प्रकाश जी के बाद धर्मेन्द्र जिज्ञासु ने अपने विचार प्रकट किये। परोपकारिणी सभा के मन्त्री ओम्मुनि जी ने आर्यसमाज के तप, तेज और पौरुष-परम्परा पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि एस.डी.एम. महोदय ने अपनी आर्यसमाज से जुड़ने की पुरानी स्मृतियों को ताजा किया। परोपकारिणी के भूतपूर्व यशस्वी प्रधान आचार्य डॉ. धर्मवीर जी की, जिज्ञासु जी द्वारा लिखित जीवनी का भव्य विमोचन इस अवसर पर किया गया अजमेर से आये श्री सोमेश ने आचार्य धर्मवीर जी के महान् सद्गुणों को कविता द्वारा प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी ने अपनी ओजस्वी वाणी से अपना हृदय उंडेलते हुए आर्यों में आर्योचित तेज का संचार किया। अध्यक्षीय भाषण में डॉ. वेदपाल जी ने कहा कि आर्यसमाज स्वभाव से ही क्रान्तिकारी है। पूर्वजों के पराक्रम हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर जैसे हैं, इनको जीवन में बनाए रखकर ही हम अपनी सनातन संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं। मंच संचालन रामनिवास 'गुणग्राहक' ने किया। शान्तिपाठ के बाद सबने मिलकर प्रीतिभोज किया। इस कार्यक्रम का समग्र व्ययभार पं. लेखराम वैदिक मिशन के प्राण पं. लक्ष्मण जिज्ञासु जी ने किया, किसी से किसी प्रकार का आर्थिक सहयोग न माँगा, हाँ जिला सभा भरतपुर की ओर से १०,०००रु. और आर्यसमाज श्री गंगानगर की ओर से ५०००रु. अवश्य प्राप्त हुए।

भोजन के तुरन्त बाद हम धौलपुर के लिए चल दिये। धौलपुर के आर्यों ने तय किया था कि हम अपने प्रेरणापुञ्ज आर्य विद्वानों का उल्लास और उत्साहपूर्वक भव्य स्वागत करेंगे तथा नगर में शोभायात्रा निकालेंगे। ऐसा ही हुआ, धौलपुर नगर और क्षेत्र के समस्त आर्यजनों ने हमारे वरेण्य विद्वानों-राजेन्द्र 'जिज्ञासु', डॉ. वेदपाल जी, ओम्मुनि जी, माता ज्योत्स्ना धर्मवीर जी, आ. ओम् प्रकाश जी आदि सबका भावभीना स्वागत किया। शोभायात्रा में श्री लाजपति शर्मा धौलपुर और श्री धर्मेन्द्र 'जिज्ञासु' फरीदाबाद ने वीररस के गीत व जयघोष करते हुए शोभायात्रा में चल रहे आर्यो में उत्साह का संचार किया। आर्यसमाज धौलपुर की ओर से विविध प्रकार के शिक्षाप्रदायक बैनर तैयार कराये गये। जिनसे शोभायात्रा का मूल सन्देश जनमानस तक पहुँचा। राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की कार पर भी आगे-पीछे सत्याग्रह के बैनर लगे थे तथा आर्यसमाज श्रीगंगानगर के प्रधान रविप्रकाश जी स्वयं अपने समाज का बैनर उठाकर चलते रहे। राजेन्द्र जिज्ञासु जी पूरी शोभा यात्रा में धूप सहते

हुए उत्साहपूर्वक ८७-८८ वर्ष की आयु में भी पैदल ही चलते रहे, कार्यक्रमस्थल 'अशोक विजय कॉम्पलैक्स' पहुँचकर लाजपति शर्मा व रामनिवास 'गुणग्राहक' ने उपस्थित आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए धौलपुर सत्याग्रह की महत्ता पर प्रकाश डाला।

दूसरे दिन प्रात: यज्ञ के बाद 'सत्याग्रह शताब्दी समारोह' श्री मानकचन्द आर्य के भक्ति गीत के साथ आरम्भ हुआ। श्री धर्मेन्द्र 'जिज्ञासु' ने स्वरचित गीत-''क्यों हमें पल-पल न आये ध्यान श्रद्धानन्द का'' गाकर वातावरण को सत्याग्रह जैसा ही बना दिया। आ. ओम्प्रकाश गुरुकुल आबू और श्री ओम्मुनि जी के व्याख्यान से पूर्व धौलपुर आर्य सत्याग्रह पर लिखी राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी की पुस्तक-'अखण्ड संग्राम' का विमोचन हुआ। आर्यसमाज श्रीगंगानगर की ओर से यह पुस्तक (२५० प्रतियाँ) नि:शुल्क बाँटी गई। इसी अन्तराल में धौलपुर के आर्यजनों ने मंचस्थ सब विद्वानों का माल्यार्पण, शॉल व स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रद्धेय राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने की। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. वेदपाल जी ने कहा कि धौलपुर के राजा ने केवल आर्यसमाज ही क्यों तोड़ा? क्योंकि आर्यसमाज पूर्णत: सत्य पर टिके रहने वाला एक तेजस्वी संगठन है। राष्ट्रीय चेतना से युक्त सत्य आधारित संगठन सबकी आँखों में सदा खटकता है। आर्यो! आर्यसमाज के तेज-ओज और सत्यनिष्ठा को बनाये रखना हम सबका धर्म है। अध्यक्षीय भाषण में हृदय के उद्गारों को श्रोताओं के हृदयों में सम्प्रेषित करते हुए राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी कई बार भावुक हो उठे। श्रद्धानन्द जैसे शूर संन्यासी के साहसिक सत्याग्रह की धरती पर खड़े होकर जिज्ञासु जी उन भावों से अछूते रह जाएँ तो शौर्य का संसार ही सूना रह जाए। जिज्ञासु जी का भावावेश देखकर मंचस्थ विद्वत्समुदाय विह्वल हो उठा। डॉ. वेदपाल जी के आदेश पर मंच संचालन कर रहे रामनिवास 'गुणग्राहक' ने जिज्ञासु जी को खड़े होकर सम्भाला। सच में वह ऐसा दृश्य था, जो आजकल कहीं देखने को नहीं मिलता। जिज्ञासु हृदय ने पिपासु हृदयों को वहाँ जो दिया, वह अनूठा था! प्रकृति भी यह देखकर द्रवित-स्रवित होने लगी। शान्तिपाठ के बाद वर्षा की फुहारों से भीगते हुए भोजन करके सब स्वगन्तव्य की ओर चले गए। धौलपुर आर्य सत्याग्रह शताब्दी समारोह की स्मृतियाँ भविष्य में उपस्थित आर्य जनमानस में अवश्य अंकुरित होंगी।

वर्षा के व्यवधान से विचलित हुए बिना परोपकारिणी सभा के मन्त्री ओम्मुनि जी, माता ज्योत्स्ना धर्मवीर जी बाड़ी पहुँच गए। राज. प्रति. सभा की गाड़ी से आर्यसमाज श्रीगंगानगर का दल भी बाड़ी पहुँच गया। आर्यसमाज बाड़ी के प्रधान श्री राकेशजी ने अपने 'मथुरा पैलेस' में कार्यक्रम रखा। विशाल सभागार, भव्य मंच देखकर सबको अच्छा लगा। सांयकाल सैकड़ों की संख्या में उपस्थित आर्यों को देखकर ओम्मुनि जी ने यज्ञ व ईश्वर के विषय में विस्तार से समझाया। रामनिवास 'गुणग्राहक' जी ने 'ईश्वर-भक्ति क्यों करनी चाहिए' विषय को लेकर व्यवहारपरक जानकारी दी। दूसरे दिन प्रात:काल यज्ञ किया, प्रसाद वितरण के बाद सभागार में सत्संग-सभा हुई। रामनिवास 'गुणग्राहक' ने परमात्मा के सच्चे स्वरूप को समझने-समझाने की कुछ कसौटियों पर चर्चा की। ओम्मुनि जी ने घर-परिवार की सुख-शान्ति को बनाये रखने का शिक्षापूर्ण वक्तव्य दिया। प्रात:कालीन सभा की अध्यक्षा बसेड़ी की विधायक श्रीमती रानी कोली ने वैदिक धर्म-चर्चा सुनने के इस अवसर को सौभाग्यप्रद व न भूलनेवाला बताया। बाड़ी के ही प्रतापमुनि जी ने सबको आशीर्वाद दिया। आर्यसमाज के प्रधान व मन्त्री राकेश द्वय ने अतिथियों को शॉल उढ़ाकर उनका सम्मान किया और भविष्य में भी आते रहने की प्रार्थना की। शान्तिपाठ के बाद भोजन करके धौलपुर सत्याग्रह की सफल परिणति से प्रफुल्लित हृदय लेकर सबने प्रस्थान किया। **-आर्यसमाज श्रीगंगानगर**

उन्नति का कारण सत्योपदेश

जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। **(स. प्र. ३)**

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एकमात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्णरूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोधकर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों में भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ सितम्बर २०१८ तक)

१. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर २. श्रीमती प्रतिभा रानी वर्मा, लखनऊ ३. श्री मुमुक्षु मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ४. श्री विमल कपूर, नई दिल्ली ५. श्रीमती मृदुला रानी सक्सेना, कोटा ६. सुश्री यशोदा रानी सक्सेना, कोटा।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ सितम्बर २०१८ तक)

१. श्री वृद्धिचन्द गुप्त, जयपुर २. श्री आर. सत्यनारायण रेड्डी, हैदराबाद ३. श्रीमती चहक गुप्ता, पंचकुला ४. श्रीमती कृष्णा तनेजा, दिल्ली ५. श्री मुमुक्षु मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ६. श्रीमती विमला गुप्ता, नई दिल्ली ७. श्रीमती शान्ति गुप्ता, नई दिल्ली ८. श्रीमती मधु शारदा, कोलकाता।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को स्थान दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हों। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

–संपादक

प्राणोपासना-१०

तपेन्द्र वेदालंकार

योगदर्शन के प्रथम पाद को समाधि पाद कहते हैं तथा यह समाहित चित्त वाले योगियों के लिए है- **उद्दिष्टः समाहित चित्तस्य योगः।** व्युत्थित चित्त वाला व्यक्ति योग कैसे करे, यह द्वितीय पाद साधनपाद में बताया गया है तथा उसके लिए तप, स्वाध्याय व ईश्वर प्रणिधान उपाय बताकर उसे क्रिया-योग नाम दिया गया है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि-इन आठ योगाङ्गों का विधान किया गया है। योग के आठ अंगों में चतुर्थ स्थान पर प्राणायाम का स्पष्ट उल्लेख है। गतिविच्छेद, उसका स्वरूप बताया जाकर बाह्य, अभ्यन्तर, स्तम्भवृत्ति तथा बाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी भेद बताये गये हैं। क्रियायोग में प्राणायाम का नामतः उल्लेख नहीं है, परन्तु तप में प्राणायाम का ग्रहण है। महर्षि व्यास लिखते हैं, ''**तपो न परमं प्राणायामात् ततो विशुद्धिर्मलानां दीप्तिश्च ज्ञानस्य।**'' प्रथम समाधिपाद में '**प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य**' सूत्र से प्राणायाम द्वारा मन की स्थिरता होने का उल्लेख है। मन की स्थिरता, बिना अशुद्धि नष्ट हुए नहीं हो सकती। अतः प्राणायाम का अभ्यास प्रत्येक श्रेणी के साधक के लिए आवश्यक है। महर्षि दयानन्द जी महाराज प्राणायाम के अभ्यास से प्राण उपासक के वश में होने, प्राण स्थिर होने से मन, मन स्थिर होने से आत्मा के स्थिर होने का लेख भाष्यभूमिका में करते हैं। सत्यार्थप्रकाश में भी प्राणायाम से आत्मा व मन की पवित्रता व स्थिरता होना महर्षि ने लिखा है।

क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र व निरुद्ध ये पाँच चित्त की अवस्थायें हैं। समाधि सभी अवस्थाओं में होती है, परन्तु क्षिप्त, मूढ़ व विक्षिप्त अवस्थाओं की समाधि योग की समाधि नहीं मानी जाती। एकाग्र अवस्था की समाधि सम्प्रज्ञात समाधि है तथा निरुद्ध अवस्था की समाधि असम्प्रज्ञात समाधि है। सम्प्रज्ञात समाधि में आत्म-दर्शन तक होता है तथा असम्प्रज्ञात समाधि में ईश्वर-दर्शन होता है। अभ्यासी को अपने बारे में सत्यता से विचार करना चाहिये कि उसका चित्त किस अवस्था में है? यदि मन को संसार के विषय, धन-सम्पत्ति आदि प्रिय लग रहे हैं, मन उनके पीछे भाग रहा है, नैतिक-अनैतिक कुछ नहीं देख रहा, विषयों की प्राप्ति व भोग में ही रमा है तो समझ लेना चाहिये कि क्षिप्त अवस्था है। यदि मन में कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का भाव नहीं, क्रोधादि आवेश है, बुरे कर्म करता है, अज्ञान, अवैराग्य, अनैश्वर्य के विचार हैं तो यह तमोगुण प्रधान मूढ़ अवस्था है। जब मन धर्म, ज्ञान, वैराग्य की भावना वाला हो, पर साथ ही ऐश्वर्य को भी चाहता हो तो विक्षिप्त अवस्था में जानना चाहिये।

अभ्यासी को दैनिक जीवन के व्यवहार में अपनी अवस्था का आकलन करना चाहिये तथा तदनुसार अशुभ भावनाओं को दूर कर अशुभ कर्मों से बचना चाहिये तथा भावनाएँ पवित्र कर शुभकर्मों में प्रवृत्त होना चाहिये। यदि विकार अधिक दिखायी पड़ रहे हैं, मन एकाग्र नहीं हो पा रहा है, तो समझ लेना चाहिये कि यम-नियमों का पालन दृढ़ता से नहीं हो रहा तथा यम-नियमों का पालन अविलम्ब प्राथमिकता से प्रारम्भ कर देना चाहिये। प्रारम्भिक अभ्यासी के लिए यह फलदायी नहीं हो सकता कि यम-नियमों पर ध्यान न हो और सीधे ही हृदयस्थल पर ज्योति देखने के लिए प्रयास शुरु कर दे। समाहित चित्त योगी ने भी समाहित चित्त होने से पूर्व यम-नियमों का पालन अवश्य किया था तथा सीधे ही समाहित चित्त की प्राप्ति नहीं की थी। विक्षिप्त चित्त वाले ने भी रज, तम को क्षीण करते हुए सत्त्व को प्रधान बताया था, उसने भी अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य आदि को कम किया था- समाप्तप्रायः किया था।

किसी ने दुकान पर छल कर लिया, किसी ने बस में दुर्व्यवहार कर दिया, किसी ने निन्दा कर दी, किसी ने आर्थिक नुकसान कर दिया, किसी ने कहा नहीं माना, छोटा-सा बताया काम नहीं किया। किसी ने अच्छा भोजन कराया, किसी ने अच्छा व्यवहार किया, किसी ने आर्थिक लाभ किया, किसी ने कहना माना, आज्ञा पालन किया, किसी ने प्रशंसा की आदि अनेकों स्थितियाँ प्रतिदिन अभ्यासी के सामने आती रहती हैं, भाव रूप से मन में भी

आती हैं। इन परिस्थितियों में मन किस प्रकार प्रतिक्रिया करता है, यह ध्यान से देखना चाहिये। द्वेष के भाव उठा रहा है या राग के भाव उठा रहा है? क्रोध के भाव उठा रहा है या हिंसा के भाव जगा रहा है? असन्तोष के भाव उठा रहा है या अवैराग्य के भाव बढ़ा रहा है? या असत्य की भावना उठ रही है या कभी-कभी समता के भाव भी आ रहे हैं? आत्मालोचन करते हुए बुराई छोड़ते हुए अच्छाई की ओर बढ़ना है। यम-नियमों ने निर्धारित कर दिया कि क्या करने योग्य है तथा क्या नहीं। यम-नियमों का गहन चिंतन करके, किस प्रकार उन्हें व्यवहार में लाना है, यह विचार करते जाना है तथा कार्यरूप में परिणत भी करना है।

अभ्यास एवं वैराग्य के द्वारा चित्तवृत्तियों का निरोध करने का लेख योगदर्शन में आया है। मन को विषयों से रोकने के लिए विषयों के दोषों के बारे में समुचित ज्ञान होना आवश्यक है, उससे ही हानि का आकलन करते हुए अभ्यासी उनसे दूर होगा-वैराग्य की ओर बढ़ेगा। मन के पुराने अभ्यास को सही दिशा की ओर मोड़ने के लिए बार-बार अभ्यास करना पड़ेगा। केवल ज्ञान मात्र से बिना अभ्यास के चित्त की वृत्तियाँ सांसारिक विषयों की ओर जाने से नहीं रुक सकतीं। व्यास भाष्य में आया है, **'इत्युभयाधीनाश्चित्तवृत्तिनिरोधः।'**

महर्षि दयानन्द जी महाराज ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उपासना विषय में अभ्यास और वैराग्य के विषय में लिखते हैं, 'इन दोनों उपायों से पूर्वोक्त पाँच वृत्तियों को रोक के उनको उपासना योग में प्रवृत्त रखना।' तत्पश्चात् लिखते हैं, 'तथा उस समाधि के योग होने का यह भी साधन है कि (ईश्वरप्रणिधान) ईश्वर में विशेष भक्ति होने से मन का समाधान होके मनुष्य समाधि योग को शीघ्र प्राप्त हो जाता है।' महर्षि पतञ्जलि ने **भव** प्रत्यय व **उपाय** प्रत्यय नाम से असम्प्रज्ञात समाधि के दो प्रकार बताये हैं। **भव** प्रत्यय विदेह व प्रकृतिलयों की होती है। **उपाय** प्रत्यय के लिए कहा है कि श्रद्धा, वीर्य, स्मृति, समाधि व प्रज्ञापूर्वक होती है। तीव्र संवेग वाले योगियों को समाधि लाभ शीघ्र होता है। अन्य उपाय बताते हुए **'ईश्वर प्रणिधानाद्वा'** सूत्र में ईश्वर प्रणिधान को आसन्नतम समाधि सिद्धि का उपाय बताया है। प्रणिधान का व्यासभाष्य में अर्थ किया है-भक्ति विशेष।

द्वितीय पाद में क्रिया योग में भी ईश्वर प्रणिधान तप व स्वाध्याय के साथ पठित है। यहाँ ईश्वरप्रणिधान का अर्थ किया है, **'ईश्वरप्रणिधानं सर्वक्रियाणां परमगुरावर्पणं तत्फलसंन्यासो वा।'** अर्थात् सभी कर्मों को ईश्वर को समर्पण करके उनके फल की इच्छा न करना। अष्टांगों के अंग नियम में भी ईश्वर प्रणिधान पठित है तथा उसका अर्थ बताया है, **'ईश्वरप्रणिधानं तस्मिन्परमगुरौ सर्वकर्मार्पणम्'**, परमेश्वर में सब कर्मों का अर्पण करना। **समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात्**-सूत्र में ईश्वर प्रणिधान का फल समाधिसिद्धि बताया है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज भाष्यभूमिका में लिखते हैं, '(ईश्वरप्रणिधानम्) अर्थात् सब सामर्थ्य, सब गुण, प्राण, आत्मा और मन के प्रेमभाव से आत्मादि द्रव्यों का ईश्वर के लिए समर्पण करना।' ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के दूसरे, तीसरे, चौथे व पाँचवें मन्त्रों में आये 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' के अर्थ भी अवलोकनीय हैं।

प्रथम-(कस्मै) उस सुखस्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिए (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें।

द्वितीय-(कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए (हविषा) आत्मा और अन्तःकरण से (विधेम) भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

तृतीय-(कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) सकल ऐश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना के लिए (हविषा) अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा में समर्पित करके (विधेम) विशेष भक्ति करें।

चतुर्थ-(कस्मै) सुखदायक (देवाय) कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए (हविषा) सब सामर्थ्य से (विधेम) विशेष भक्ति करें।[१]

वह परमात्मा सुखस्वरूप है, शुद्ध है, सकल ज्ञान का देने हारा है, सकल ऐश्वर्य का देने हारा है, कामना करने योग्य है। उस परमात्मा की प्राप्ति कैसे करें? ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास व अतिप्रेम से, आत्मा व अन्तःकरण से,

अपनी सकल सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पण से तथा सब सामर्थ्य से, विशेष भक्ति से। भक्ति क्या है? उसी की आज्ञा पालन में तत्पर रहना। परमात्मा का स्वरूप, भक्ति का तरीका तथा भक्ति का अर्थ अभ्यासी को हृदयंगम कर लेना चाहिये तथा ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों के उच्चारण या जप के समय इस अर्थ की भावना पक्की करनी चाहिये। व्यवहारकाल में इसके पालन से ईश्वर प्रणिधान करने में सहायता मिलेगी। भोजवृत्ति के अनुसार भावना का अर्थ है, '**भावनं पुनः पुनश्चेतसिविनिवेशनम्।**' बार-बार किसी भाव की आवृत्ति करते हैं तो करते-करते वह भावना बन जाती है यह भावना एकाग्रता का उपाय है।

अपने सब सामर्थ्य आदि का समर्पण उस परमपिता को कैसे होगा? अपने सभी कर्मों का अर्पण उस पिता को कैसे करेंगे? फल की इच्छा को कैसे छोड़ेंगे? जब तक ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को स्पष्टतः नहीं जानेंगे, उन पर दृढ़ आस्था नहीं होगी। बिना ईश्वर विश्वास के न कार्य अर्पण हो सकते, न फल की इच्छा छूट सकती। ईश्वर संसार की उत्पत्ति, पालन व प्रलय करता है तथा कर्मों का यथोचित फल देता है। स्वाध्याय से तथा दुनिया को पढ़-समझ कर यह विश्वास हो जाना चाहिये कि सब कुछ उस परमपिता परमात्मा का ही दिया हुआ है। हवा, पानी, प्रकाश आदि बिना पैसे उस परमात्मा ने ही दिया है। ये विविध गुणों वाले पदार्थ हमारे उपयोग, उपभोग के लिए उसी ईश्वर ने दिये हैं। आत्मा जिनके बिना कोई भोग नहीं भोग सकता, वे इन्द्रिय आदि करण भी उसी ने दिये हैं। ईश्वर सर्वव्यापक होने से प्रत्येक वस्तु में विद्यमान है, मेरे अन्दर भी है, मेरे अच्छे-बुरे सभी कर्मों को देख रहा है, बिना भेदभाव उनका अच्छा-बुरा फल देगा। वह दुःख भी इसलिए दे रहा है कि दुःख भोगकर वापस आत्मा पुण्य प्रधान हो जावे, फिर से उसे मानव जन्म मिल जावे, फिर से वह दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति की ओर अग्रसर हो सके, फिर से उसे मुक्त होने का अवसर मिल सके।

संसार के सुखों को भोगते-भोगते जीवात्मा को पता चलता है कि ये सुख सुख हैं, आनन्द इनमें नहीं है। ये सुख भी ऐसे हैं जिनमें दुःख मिश्रित है। जीवात्मा खोजता है तो पाता है कि आनन्द तो केवल परमपिता परमात्मा के पास ही है। जो वस्तु जहाँ होगी वहीं मिलेगी। साबुन की दुकान पर जाकर सोना माँगें तो नहीं मिलेगा। अतः अभ्यासी को आप्त प्रमाण पर पूर्ण आस्था कर तथा सांसारिक जीवन में संसार के सुखों का ज्ञानपूर्वक भोग करते हुए यह दृढ़ निश्चय कर लेना चाहिये कि सांसारिक वस्तुओं में, विषयों में फँसकर परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता। उसके लिए '**आवृत्त चक्षु**' होना पड़ेगा। दुनियादारी के छन्दों से विरत होना पड़ेगा। परमपिता को समर्पण करना होगा, ईश्वर प्रणिधान करना होगा। जितनी-जितनी सांसारिकता छूटेगी, उतना-उतना ही समर्पण व ईश्वर-प्रणिधान होगा। इसके लिए परमपिता से प्रार्थना भी करनी होगी। महर्षि भाष्यभूमिका के वेदोक्त विषय में '**अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि...' मन्त्र का अर्थ करते हुए लिखते हैं-'' ...सब मनुष्य लोग ईश्वर के सहाय की सदा इच्छा करें क्योंकि उसके सहाय के बिना धर्म का पूर्ण ज्ञान और उसका अनुष्ठान कभी पूरा नहीं हो सकता।''**

टिप्पणी

१. वैदिक नित्यकर्म विधि- वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।

-५३/२०३, मानसरोवर, वी.टी. रोड़, जयपुर

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' आर्यों का ब्रह्मास्त्र है। ऐसा ब्रह्मास्त्र, जिसने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अन्धश्रद्धा, अविवेक और पाखण्ड मानव समाज में सहज ही पनपने वाली समस्या है, इसलिये प्रत्येक काल, प्रत्येक स्थान और प्रत्येक परिस्थिति में इन समस्याओं के उन्मूलन की आवश्यकता है-अत: 'सत्यार्थ प्रकाश' की आवश्यकता भी सदैव ही अनिवार्य रहेगी, परन्तु यह विचार जन-जन तक पहुँचे, तो ही लाभकारी होगा। इसी को ध्यान में रखते हुए परोपकारिणी सभा ने ५ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष 'सत्यार्थप्रकाश' के साथ 'महर्षि का जीवन-चरित्र' एवं 'आर्याभिविनय' पुस्तक का नि:शुल्क वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है। इस कार्य के परिणाम भी बहुत सुखद रूप में सामने आये हैं। पुस्तक में कई व्यक्ति आकर कहते हैं कि हमारे पास यह पुस्तक है, हम पिछले वर्ष ले गये थे।

प्रत्येक आर्यमात्र की यह इच्छा होगी कि वह भी इस ग्रन्थ को वितरित कर पुण्य का भागी बने। इसके लिये सभा प्रत्येक आर्य को इस महायज्ञ में सम्मिलित करना चाहती है। प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ में अपनी आहुति दे तो यज्ञ और अधिक भव्य एवं विस्तृत हो जाता है। 'सत्यार्थप्रकाश' के नि:शुल्क वितरण रूपी यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिये आप अपने सामर्थ्यानुसार सहयोग दे सकते हैं। परोपकारिणी सभा की ओर से प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश बड़े अक्षरों में, बढ़िया कागज पर, सजिल्द छापी जाती है, जिससे नये व्यक्ति के लिये भी पुस्तक संग्रहणीय बन जाती है। इस पुस्तक की छपाई में एक प्रति का खर्च लगभग १०० रु. आता है। **यदि कोई व्यक्ति अपनी सात्त्विक भावना से केवल २० पुस्तकें (इससे अधिक कितनी भी) ही वितरित करवाना चाहता है, तो सभा उतनी प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित करेगी। इसी प्रकार ३०, ५०, १०० आदि।**

१०० रु. प्रति के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं। आहुतियाँ जितनी अधिक होंगी, यज्ञ का फल भी उतना ही अधिक होगा।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं। यह यज्ञ आपका है, प्रत्येक आर्य का है। अत: प्रत्येक आर्य इसमें अपनी आहुति अवश्य दे।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	२१००/- रु.
	३० प्रतियाँ	३१००/- रु.
	५० प्रतियाँ	५१००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	११०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी और दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। दान अक्टूबर माह के अन्त तक भिजवा देवें, ताकि प्रतियों की संख्या निर्धारित करके उन पर दानदाताओं का नाम अंकित किया जा सके। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

आह! डॉ. भवानीलाल भारतीय चल बसे

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

जिनसे हमारा आत्मीय सम्बन्ध होता है, ऐसे किसी भी सज्जन के लिये '**चल बसा**'-ये दो छोटे से शब्द पढ़ सुनकर हमें एक धक्का सा लगता है। हमारा दु:खी होना स्वाभाविक है। आर्यसमाज के महान् विचारक व सर्वमान्य नेता पं. गंगाप्रसाद जी ने एक बार लिखा था कि '**चल बसा**' ये दो शब्द बहुत मार्मिक व प्यारे हैं। जाना तो सबको है, परन्तु जो जीवनभर क्रियाशील रहकर, बहुत कुछ करके संसार से जाता है, उसके लिये '**चल बसा**' शब्दों का अर्थ मरना या समाप्ति समझना अदूरदर्शिता है। **वह चलकर कहीं बस गया, बस जाना तो सुखद व शुभ समाचार है।**

हमारे आदरणीय भारतीय जी भी पकी आयु भोगकर-नब्बे वर्ष का दीर्घजीवन पाकर देह का त्याग करके गये हैं। आप यह कहिये कि इस लोक में जीना बन्द करके कहीं अन्यत्र अब जा बसे हैं। यहाँ जो किया-जो दिया उसके फलस्वरूप यह पूँजी वहाँ काम आयेगी। वहाँ भी वे अपने काम से नाम पायेंगे।

मैं नौ सितम्बरको सत्संग के पश्चात् जब श्रीगंगानगर समाज से चलने लगा तो श्री गुणग्राहक जी से पूछा, ''आज भारतीय जी के सुपुत्र सत्संग में नहीं आये। भारतीय जी ठीक तो हैं?'' श्री गुणग्राहक जी ने कहा, ''गौरमोहन आज पता नहीं सत्संग में क्यों नहीं आये। भारतीय जी के स्वास्थ्य के बारे में कोई चिन्ता करने वाली सूचना तो नहीं।''

श्री गौरमोहन, पता चला कि उस दिन श्रीगंगानगर थे ही नहीं। मुझे तभी कुछ पूर्वाभास सा हो गया था। मंगलवार गुणग्राहक जी ने चलभाष पर सूचना दी कि भारतीय जी चल बसे।

श्री भारतीय जी से जुड़े संस्मरणों के अटूट भण्डार में से कुछ निवेदन करता हूँ। नई पीढ़ी कुछ सीख सकती है तो इससे ग्रहण करना चाहिये। **मैंने श्री भारतीय जी की विशेष प्रेरणा से कई विशेष कार्य किये, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।** श्रीमान् विद्यानन्द जी विदेह के मरणोपरान्त उनकी आत्मकथा 'विदेह गाथा' के नाम से उनके पुत्रों ने प्रकाशित की। उसमें आर्यसमाज के सब जाने-माने विद्वानों साधुओं व नेताओं की जी-भरकर निन्दा की गई। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जैसी दिवंगत विभूतियों के विरुद्ध भी लिखा गया। उसमें अजमेर का होने के कारण भारतीय जी तथा आचार्य भद्रसेन बच गये। भारतीय जी ने इस पुस्तक को पढ़ा तो उन्हें उसके आर-पार जाकर बड़ा दु:ख हुआ। आपने किसी के हाथ अपनी प्रति लौटाने की शर्त पर भेजते हुये मुझे यह कार्य सौंपा कि आप इसकी शव-परीक्षा करके '**परनिन्दा-आत्मस्तुति पुराण**' शीर्षक से एक पठनीय लेख दें। मैं भारतीय जी की आज्ञा टाल न सका। दिल दुखाने वाली पुस्तक थी। इसे शीघ्र तो पढ़ न सका। समय लगा। मैंने इसके कुछ अंश स्वामी ओमानन्द जी को और स्वामी सर्वानन्द जी को मिलकर सुनाये। दीनानगर मठ में स्वामी सोमानन्द जी ने इसे मुझसे लेकर पढ़ा।

मैंने जैसा भारतीय जी का निर्देश था, बहुत तथ्यपूर्ण उत्तर देते हुये एक लेख भारतीय जी के सुझाये गये शीर्षक से छपवा दिया। सब छोटे-बड़े पाठकों व भारतीय जी ने मेरे लेख की भूरि-भूरि प्रशंसा की। मैं आर्यसमाज के गौरव की कुछ रक्षा कर सका तो इसका श्रेय भारतीय जी को देना चाहिये। यह बात मिलने पर सब को कहता रहा।

भारतीय जी विरोधियों तथा विधर्मियों को उत्तर देने-उनका खण्डन करने में तो रुचि नहीं लेते थे, परन्तु कई करणीय कार्यों के करने में बहुत रुचि लेते थे। जब मैंने '**आर्यसमाज का उर्दू साहित्य**' लेखमाला परोपकारी में आरम्भ की तो क्रमश: चार-पाँच मणियाँ ही देने का विचार था, सोचा फिर पुस्तक लिख दूँगा। भारतीय जी ने पत्र पर पत्र लिखकर व मिलकर ऐसी प्रबल प्रेरणायें दीं कि सम्भवत: तीन वर्ष तक यह लेखमाला छापी। भारतीय जी के **लेखक कोश** का एक प्रधान स्रोत यह लेखमाला बनी। श्रद्धेय श्री आचार्य उदयवीर जी तथा स्वामी सत्यप्रकाश जी ने इस लेखमाला की भूरि-भूरि प्रशंसा की तो मैंने उन्हें

भी कहा, ''मैं तो इस कार्य को कुछ समय के लिये लटका देता, परन्तु भारतीय जी को धन्यवाद दें कि उन्होंने पीछे पड़कर इसे पूरा करवाकर ही चैन लिया।''

उनकी एक विशेष रुचि- उन्होंने एक बार अपने निवास पर मुझे अपनी कुछ कॉपियाँ दिखाईं। आर्यसमाज में विभिन्न विषयों पर, समय-समय पर क्या-क्या पुस्तक या ट्रैक्ट किस-किस ने लिखा और कहाँ-कहाँ से ऐसा साहित्य छपा। यथा नमस्ते, आर्य और हिन्दू नाम, मांसाहार, पुराणों पर, सत्यार्थप्रकाश पर, ऋषि जीवन पर आक्षेपों का उत्तर किस-किस ने कब-कब दिया? आदि आर्यसमाज के निर्माताओं की जीवनियों की सूचियाँ बनाते रहते थे। इस कार्य का एक विशेष महत्त्व है। मैंने इसका महत्त्व समझकर आगे और चिन्तन-मनन करके कई युवकों को इस शैली से आगे कार्य करने को कहा। श्रीमान् धर्मेन्द्र जी 'जिज्ञासु', श्री प्रभाकर आर्य अजमेर तथा श्रीयुत् सोमेश पाठक ने इस दिशा में कुछ ठोस कार्य किया है व कर रहे हैं और कई ऐसे भी मिले कि बातें तो बहुत बनाईं, योजनायें बना-बनाकर रिझा दिया, परन्तु नाम बड़े व दर्शन छोटे वाली उक्ति उन पर चरितार्थ होती है।

उनकी सनक, उनका एक विशेष गुण- पुस्तकालयों को देखना भारतीय जी की बहुत बड़ी दुर्बलता थी अर्थात् यह उनका एक प्रशंसनीय गुण था। कहीं किसी पुराने पुस्तकालय में आर्यसमाज सम्बन्धी उर्दू साहित्य का उन्हें पता चले तो आप मेरे जैसे किसी व्यक्ति को पकड़ लेते, जो उर्दू भी जानता हो और विषय पर भी अधिकार रखता हो। बस फिर क्या कागज़ लेकर बैठ जाते। एक बार पानीपत के पुराने बड़े समाज का पुस्तकालय मैंने खुलवाया। भारतीय जी को गंध आ गई। आप भी सब काम छोड़ कर सब कुछ भूलकर मेरे पीछे-पीछे समाज मन्दिर पहुँच गये।

मुझे कहा, ''एक-एक पुस्तक का, पुरानी पत्रिकाओं के विषय, प्रकाशन के मास व सन्-संवत् की सब आवश्यक जानकारी मुझे लिखवाते जायें।'' इसी को कहते हैं लटक या लगन। उनकी धुन को देखकर हम लोग जो वहाँ थे, बहुत दंग रह गये। वह अपने कार्य में ऐसे डूब गये कि मेरा कार्य गौण हो गया, भारतीय जी का कार्य मुख्य हो गया। उन्होंने उस दिन प्राप्त की गई जानकारी का भरपूर लाभ उठाया व पाठकों को भी लाभान्वित किया।

श्री ईश्वरीप्रसादजी मथुरा ने कोई पुस्तक लिखी व छपवाई। उस पुस्तक में किसी चूक पर भारतीय जी का ध्यान चला गया। आपने डॉ. धर्मवीर जी को प्रेरित किया कि इस चूक की ओर लेखक तथा पाठकों का ध्यान आकर्षित करने के लिये एक पठनीय लेख लिखें। उन्होंने भारतीय जी की बात मानकर झट से ऐसा कर दिखाया। जो कार्य उन्हें करना होता था वे उसे लटकाते नहीं थे। कैसे भी होकर करवा लेते थे।

ऋषि की बलिदान शताब्दी के लिये- ला. रामगोपाल जी व लाला सोमनाथ जी ऋषि की बलिदान शताब्दी दिल्ली में मनाना चाहते थे। श्रीमान् श्रीकरण शारदा चाहते थे कि बलिदान शताब्दी अजमेर में मनाई जावे। चौधरी चरणसिंह जी के पश्चात् परोपकारिणी को ऐसा प्रधान चाहिये था जो इसके लिये रामगोपाल जी के सामने अड़ सके। पानीपत में एक सम्मेलन था। मैं भी वहाँ दर्शक के रूप में पहुँचा। भारतीय जी श्रीकरण शारदा जी को लेकर वहाँ मेरे पास आये। उक्त समस्या के समाधान के लिये मेरा सहयोग माँगा। मैंने पूछा, क्या चाहिये? क्या करूँ?

दोनों ने कहा, ''आप हमारे साथ स्वामी ओमानन्द जी के पास चलो। उन पर दबाव दो कि वह सभा प्रधान बनने को तैयार हों, तभी यह काम होगा। हम तीनों स्वामी जी के साहित्य स्टाल पर पहुँच गये। श्रीकरण जी ने अपनी बात कही। मैंने उनके कथन का प्रबल समर्थन करते हुये स्वामी जी को इस महोत्सव को सफल बनाने के लिये स्वीकृति दिलवा दी। ये दोनों महानुभाव गद्‌गद हो गये। कहा, हमें पता था कि स्वामी जी आपके साथ जुड़ने से हमारी विनती अवश्य स्वीकार करेंगे।'' इस कार्य की सिद्धि के लिये श्री भारतीय जी ने ही श्रीकरण जी को मेरा नाम सुझाया था।

षड्यन्त्र विफल कर दिया गया- कोलकाता के एक दीनबन्धु शास्त्री ब्रह्मसमाजी थे या क्या थे, यह कहना कठिन था। उन्होंने कुछ ब्रह्मसमाजियों के घरों से ऋषि जी द्वारा अपनी तथाकथित आत्मकथा के लिखवाये गये पत्रों को 'महर्षि की अज्ञात जीवनी' नाम देकर एक लेखमाला

में प्रकाशित करवा कर, नई-नई गप्पें गढ़कर क्रमश: लेखमाला के रूप में प्रकाशित करवाकर सनसनी फैला दी। १८५७ के विप्लव में ऋषि की भागीदारी का कल्पित इतिहास ऋषि जीवन को प्रदूषित करने का बहुत बड़ा कारण बना।

मेरठ के तपस्वी विद्वान् संन्यासी स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज ने अपनी लेखनी उठाकर इस नये पुराण की अकाट्य तर्कों व इतिहासकारों के सबल प्रमाणों से धज्जियाँ उड़ा दीं। सब प्रबुद्ध पाठक स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के सुशिष्य, गम्भीर विद्वान् स्वामी पूर्णानन्द जी[१] के इतिहास-शास्त्र के अथाह ज्ञान को देखकर दंग रह गये।

ये पत्र जो मिले, वे गुप्त सामग्री कैसी? गुप्त सामग्री क्या घर-घर में गुप्त और सुरक्षित रह सकती है? बस यह लम्बी कहानी है। डॉ. भवानीलाल जी भी इस नवीन पुराण के खण्डन में आगे आ गये। आपने न दिन देखा न रात। एक के पश्चात् दूसरा लेख इस कल्पित मिथ्या इतिहास के खण्डन में लिखा। उधर आचार्य राजेन्द्रनाथ जी दिल्ली वाले संन्यासी बनकर नये नाम से एक पुस्तक छपवाकर इस छल-कपट के पोषण में आगे आ गये। दो और सज्जन एक इसी विषय का पोथा रचने के लिये काशी नगरी से पोपडम का आशीर्वाद लेकर मैदान में कूद पड़े।

श्रीमान् भारतीय जी ने इस लेखक का, मान्य डॉ. ज्वलन्त जी का सहयोग लेकर इन्हें शास्त्रार्थ की चुनौती तक दे डाली। यद्यपि इन पंक्तियों का लेखक भारतीय जी से कहता रहा कि इस झूठ की बार-बार लेखों में चर्चा करने से दम्भ को, पाखण्ड को फैलने में कुछ बल मिलेगा, परन्तु हम लोग इस नये पुराण-पंथ के थे तो घोर विरोधी। श्रीमान् भारतीय जी का इस दम्भ दुर्ग को ध्वस्त करने के लिये अदम्य उत्साह बस देखे ही बनता था। इसके लिए वह सदा ही स्मरणीय रहेंगे।

टिप्पणी-

१. लेखक का नामकरण संस्कार इन्हीं स्वामीजी व पं. हीरानन्द जी ने करवाया था।

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीवों को अत्यन्त सुख पहुँचावें। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२**

ऋषि मेला २०१८ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १६, १७, १८ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१८ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉल लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उसी क्रम से स्टॉल का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉल की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज-** ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- १. स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है।७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोट:-** किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

स्व. श्री नौबतराम जी (एक कर्मठ आर्य)

आज से लगभग ९४ वर्ष पूर्व श्री स्व. नौबतराम जी का जन्म अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) में हुआ। संक्षिप्त गृहस्थ आश्रम को त्यागकर आपके हृदय में महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन की जो ज्वाला जली तो आप अपने कर्त्तव्य-पथ पर अग्रसर हो गये। आपको भजनोपदेशक का कार्य उत्तम लगा, क्योंकि भजनों की मधुरता और उनकी व्याख्या ग्रामीणों एवं नगरवासियों के हृदय में आसानी से उतर जाती है। भजनोपदेशक के रूप में आप नगर-नगर, ग्राम-ग्राम भ्रमण करते हुए आर्यसमाज के प्रचारक के कर्त्तव्य निभाते रहे। शरीर से साधारण होते हुए भी आपके हौसले बुलन्द थे तथा निर्भयता आपका चारित्रिक गुण था। आपको विदित हुआ कि अलीगढ़ के आर्यसमाज को असामाजिक तत्त्वों ने अपने आधीन कर रखा है तो आपने बिना किसी विलम्ब के, बिना किसी की सहायता से, वहाँ पहुँचकर उन असामाजिक तत्त्वों को पकड़ के बाहर कर दिया। यद्यपि शारीरिक रूप से वे लोग नौबतराम जी से दोगुने थे, परन्तु इस ऋषि भक्त ने बिना भयभीत हुए उनको बेदखल कर दिया। बाद में तो उन लोगों ने नौबतराम जी से क्षमा माँग ली।

आपका गला भी मधुर था तथा वाद्ययन्त्र (हरमोनियम) बजाने में भी आप पारंगत थे, अत: साज और आवाज की इस जुगलबन्दी ने आपको भजनोपदेशक के रूप में प्रसिद्ध किया और इसी गुण के अन्तर्गत आपने नेपाल में भी अपने भजनों की धूम मचा दी। आपके प्रचार व व्याख्यान शैली से प्रभावित होकर ऋषि मेले में लगभग २५-३० नेपाली नागरिक पधारे एवं परोपकारी पत्रिका के सदस्य बने।

जिस प्रकार कुएँ की मिट्टी कुएँ में ही खप जाती है, उसी प्रकार आपको जो दक्षिणा प्राप्त होती थी, उसे 'परोपकारिणी सभा' अजमेर के मेहनती कर्मचारियों को ऋषि मेले पर पुरस्कार के रूप में वितरित कर देते थे।

ये ऋषिभक्त, कर्मठ आर्य अन्तिम समय तक धर्मप्रचार करते रहे और आप जब रुग्ण हुए तो आपके स्वास्थ्य की चिन्ता परोपकारिणी सभा के प्रधान, मन्त्री एवं अन्य कार्यकारी सदस्यों को थी। अत: आपको अजमेर के प्रसिद्ध चिकित्सालय 'मित्तल हॉस्पिटल' में भर्ती कराकर उपचार में कोई न्यूनता नहीं रखी, परन्तु विधि के विधान को कौन टाल सकता है, पूर्ण प्रयत्नों के पश्चात् आपने दिनांक २८/०८/२०१८ को अपनी नश्वर देह का त्याग किया। परोपकारिणी सभा द्वारा आपका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आर्यजनों की उपस्थिति में सम्पन्न किया गया।

ऋषि उद्यान

सुमित्रा देवी आर्या

अजमेर में स्थित है ऋषि उद्यान,
आर्यों का ये तीर्थ स्थान।।
ऋषि ने जैसी रीत बताई,
ऋषि दयानन्द के अनुयायी,
मिलकर करते यहाँ अनुष्ठान,
ऋषि की यह पावन पहचान।।
मिलता यहां सत्य का ज्ञान,
मिटता जिससे समग्र अज्ञान,
विद्वज्जन करते हैं यहाँ पर,
वेद शास्त्रों का व्याख्यान।।
शिविरों का होता आयोजन,
ऋषि मेला सजता मनभावन,
भाग लेते हैं श्रद्धा-भाव से,
महिला, बालक, वृद्ध, जवान।।
कंबल और कमंडल थाली,
रेत घड़ी और खड़ाऊँ निराली,
एक भवन में यहाँ सजा है,
ऋषिवर का दुर्लभ सामान।।
एक ओर उन्नत पर्वत है,
दूजी ओर आनासागर तट है,
मानों प्रकृति ने दान किये हैं,
ऋषि उद्यान को दो निर्माण।।
यहाँ बहुत अधिकारी आये,
भक्त और धनधारी आये,
किन्तु था धर्मवीर का मिलना,
ऋषि उद्यान को एक वरदान।।
अपना जीवन अर्पित करके,
आर्यजनों को प्रेरित करके,
खण्डहर बने ऋषि उपवन को उसने,
बना दिया फिर आलीशान।।

झज्जर, हरियाणा

संस्था समाचार

जन्मदिवस पर यज्ञ- ऋषि उद्यान की भव्य यज्ञशाला में ५ सितम्बर को डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली की धर्मपत्नी श्रीमती कमला पंचोली ने अपने जन्मदिन पर और ८ सितम्बर को श्री लक्ष्मण मुनि जी ने अपने सुपौत्र आलोक शंकर के जन्मदिन पर यज्ञ किया। परोपकारिणी सभा की ओर से सभी यजमानों और उनके परिवारजनों को हार्दिक शुभकामनायें।

वेदारम्भ संस्कार- परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान' में आये नये १० ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार मंगलवार ११ सितम्बर को सम्पन्न हुआ। सभी ब्रह्मचारियों को यज्ञोपवीत, मेखला और दण्ड धारण करवाया गया। आचार्य विद्यादेव जी ने गायत्री मन्त्र का उपदेश करते हुए सभी ब्रह्मचारियों का संस्कार सम्पन्न करवाया। इसके साथ ही ऋषि उद्यान में गुरुकुल पुनः प्रारम्भ हो गया है। सभा के कार्यकारी प्रधान डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आचार्य विद्यादेव जी के मार्गदर्शन में यह गुरुकुल महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट पाठ्यक्रम अनुसार ही चलेगा। सभा मन्त्री श्री ओममुनि जी, संयुक्त मन्त्री डॉ. दिनेश शर्मा जी, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि, डॉ. वेदप्रकाश विद्यार्थी जी, श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर' और श्री कन्हैयालाल आर्य ने भी ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद दिया तथा गुरुकुल संचालन में पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर नगर आर्यसमाज से श्री चन्दराम आर्य, श्री नवीन मिश्रा जी तथा अन्य लोग उपस्थित रहे। जिन ब्रह्मचारियों के संस्कार हुए उनके नाम हैं- ब्र. महेश आर्य, ब्र. सुनील, ब्र. सत्येन्द्र, ब्र. दशरथ, ब्र. जितेन्द्र, ब्र. निखिल, ब्र. विष्णु, ब्र. रवीन्द्र, ब्र. रोहित और ब्र. आर्यसुमन।

दैनिक प्रवचन-प्रातः एवं सायंकालीन सत्संग में आचार्य विद्यादेव, श्री ओममुनि वानप्रस्थी, श्री कन्हैयालाल आर्य, डॉ. नन्दकिशोर काबरा, श्री रमेश मुनि और श्री सुरेन्द्र आदि के प्रवचन हुए।

वानप्रस्थ दीक्षा - ऋषि उद्यान की यज्ञशाला में १२ सितम्बर को ऋषि उद्यान गुरुकुल के आचार्य विद्यादेव ने ग्राम बोधन, जिला निजामाबाद (तेलंगाना) निवासी ८८ वर्षीय श्री शंकरराव भालेकर को वानप्रस्थ आश्रम में दीक्षित किया और उनका नया नाम शंकरमुनि रखा गया।

शोक समाचार - प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. भवानीलाल भारतीय जी का श्रीगंगानगर में देहांत का समाचार मिलने पर ऋषि उद्यान में प्रातःकाल स्वस्तिवाचन एवं शान्तिकरण के मन्त्रों से विशेष यज्ञ किया गया। यज्ञ के पश्चात् सभी संन्यासियों, वानप्रस्थियों, ब्रह्मचारियों एवं साधकों ने उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

अतिथि- अजमेर नगर में केसरगंज स्थित ऐतिहासिक महर्षि दयानन्द आश्रम, वैदिक यन्त्रालय, अनुसन्धान भवन एवं वैदिक पुस्तकालय, ऋषि निर्वाण स्थल-भिनाय कोठी, अन्त्येष्टि स्थल-मलूसर, ऋषि उद्यान स्थित महर्षि दयानन्द सरस्वती संग्रहालय, महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल आदि महत्त्वपूर्ण स्थानों को देखने, संन्यासियों-विद्वानों से मिलकर शंका-समाधान करने, उपदेश ग्रहण करने, व्याकरण-दर्शन-वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन करने, दैनिक यज्ञ एवं प्रवचन से लाभ लेने, पुष्कर आदि पर्यटन स्थलों में भ्रमण एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए देश-विदेश के संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, पुरोहित, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, आर्यवीर, आर्यवीरांगना, आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता, गृहस्थ स्त्री-पुरुष और बच्चे निरन्तर आते रहते हैं। सभी आगन्तुकों के निवास एवं नाश्ता, भोजन, दूध आदि की समुचित व्यवस्था ऋषि उद्यान में उपलब्ध रहती है। पिछले १५ दिनों में जयपुर, हरिद्वार, भीलवाड़ा, नागौर, जोधपुर, देहरादून, श्रीगंगानगर, पलामू, मेड़ता सिटी आदि स्थानों से ४१ अतिथि ऋषि उद्यान पधारे।

राष्ट्रभाषा के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

डॉ. जगदेव विद्यालंकार

भारतीय संस्कृति जब पतन के कगार पर खड़ी एक धक्के की राह देख रही थी। धर्म की आड़ में जब स्वार्थ चिन्ता-निमग्न, दुर्वासनावह्निदग्ध हृदय एवं कुत्सित कृत्यों द्वारा निकृष्टात्मा दुर्जन निरपराध भोले लोगों को अन्धपरम्पराओं की ओर धकेल रहे थे। वेदों को अवैध बुद्धियों द्वारा विरूपित किया जा रहा था, ऋषि-परम्परा को तिमिर के गर्त में प्रक्षिप्त कर दिया था, मानवता की मर्यादाओं का चुन-चुनकर हनन किया जा रहा था और पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी हुई भारतमाता कराह रही थी, तब वेदपथज्ञाता, गोत्राता, नारीजाति के उद्धारक, राष्ट्रभाषा के उन्नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती का इस भूमण्डल पर आगमन हुआ। युगप्रवर्तक देव दयानन्द ने जो युगान्तर उपस्थित किया, वह किसी भी राष्ट्र एवं जाति के प्रति निष्ठा रखने वाले मनुष्य से तिरोहित नहीं है। स्वामी जी राष्ट्रभाषा (हिन्दी) में शिक्षा का राष्ट्रियकरण करना चाहते थे और विज्ञान तथा कला-कौशल द्वारा देश को समृद्ध बनाने की उन्हें विशेष चिन्ता थी। उस प्राणीहितचिन्तक की प्रतिभासम्पन्न बुद्धि ने यह निर्णय कर लिया था कि सब सुखों की खान वेद है। उनका मूलमन्त्र था-वेदों की ओर लौटो।

सर्वमान्य एवं सार्वभौम वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना करके देश अपितु सम्पूर्ण जनजाति को जागृत करना उनका मुख्य उद्देश्य था। स्वामी जी की पैनी दृष्टि ने यह अनुभव किया कि राष्ट्र की एकता के लिए एक भाषा होना जरूरी है, इसलिए वे कहते थे आर्यभाषा हिन्दी में ही वह सामर्थ्य है जो सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में पिरो सकती है। यद्यपि स्वामी दयानन्द सर्वाङ्गीण सुधार-पथ के अनुगामी थे, परन्तु प्रस्तुत लेख में हमें उनकी हिन्दी-सेवा ही विशेष रूप से अभिप्रेत है, अत: उस प्रकरण की अवधि का अतिक्रमण करना सुसंगत न होगा।

जनभाषा की एकमात्र अधिकारिणी हिन्दी को 'आर्यभाषा' नाम प्रदान कर स्वामी जी ने व्याख्यान, ग्रन्थ-रचना एवं पत्रों द्वारा व्यापक प्रचार करके राष्ट्रभाषा के पद पर प्रस्थापित किया। संस्कृत के अतिरिक्त स्वामी जी को सभी भाषाओं से, यहाँ तक कि गुजराती भाषा से भी अधिक हिन्दी से स्नेह था। यद्यपि खड़ी बोली में उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में रामप्रसाद निरञ्जनी, सदासुखलाल और इंशाअल्ला खाँ ने अपने स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना की, लल्लू जी लाल और सदल मिश्र ने भी हिन्दी-प्रचार में श्रेय प्राप्त किया, परन्तु हिन्दी के लिए स्वामी दयानन्द ने जो अद्भुत कार्य किया, यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो हिन्दी साहित्य को नये सांचे में ढालने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से भी उनका कार्य कहीं अधिक प्रशंसनीय था। स्वामी दयानन्द सर्वप्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने हिन्दी भाषाभाषियों के लिये वेद सुलभ कर दिया, खण्डन-मण्डनात्मक साहित्य का सृजन किया, हिन्दी में व्याख्यान एवं शास्त्रार्थ द्वारा प्रचार किया, आर्यसमाज द्वारा संगठित रूप से बल दिया गया।

बम्बई में निर्मित आर्यसमाज के २८ नियमों में एक नियम यह भी था कि संस्कृत एवं आर्यभाषा में नाना प्रकार के सदुपदेश की पुस्तकें होंगी। अत: आर्यसमाज के सभी सदस्यों को हिन्दी अवश्य पढ़नी चाहिए। १८७३ तक वे अपने भाषण एवं शास्त्रार्थों में निरन्तर संस्कृत बोलते थे। अब धर्म-प्रचारार्थ स्वामी जी ने हिन्दी अपनाई तथा साथ ही हिन्दी-प्रचार का ध्येय भी उन्होंने बना लिया क्योंकि धर्म-प्रचार की व्यापकता का आधार बनने योग्य भाषा केवल हिन्दी ही थी। अत: बिना किसी मध्यस्थ के, जनता तक उन्होंने अपने स्पष्ट विचार पहुँचाकर वैदिक धर्म-प्रचार ही नहीं अपितु हिन्दी के प्रति महान् उपकार किया है।

स्वामी जी द्वारा हिन्दी प्रचार के साधन-

व्याख्यान-१८७४ के उपरान्त बम्बई जैसे प्रदेशों में भी जहाँ गुजराती में विचार स्पष्ट करना अधिक सरल था, हिन्दी में ही भाषण दिए। यहाँ तक कि उनके निरन्तर परिमार्जित हिन्दी के व्याख्यान सुनकर लोग यह कहने का दुस्साहस भी करने लगे थे कि स्वामीजी को संस्कृत नहीं आती, इसी से उनके हिन्दी-प्रेम का परिचय मिल जाता है। उनका स्वर गम्भीर, उच्चारण स्पष्ट और वर्णन आकर्षक होता था। बरेली में स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) को प्रभावित करने वाले ऋषि के निम्नलिखित निर्भीक शब्द द्रष्टव्य हैं- ''लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो। कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।'' समयानुसार हास्य का पुट देकर दक्ष मनोवैज्ञानिक की भाँति जनता की शिथिलता परिलक्षित कर ऐसी वार्त्ता सुनाते जिससे जनसमूह में एक लहर सी आ जाती और प्रत्येक व्यक्ति गम्भीर श्रोता

बन जाता। हिन्दी से अनभिज्ञ व्यक्ति भी उनके व्याख्यानों का आस्वाद लेने के लिए हिन्दी की ओर प्रवृत्त होने लगे थे।

शास्त्रार्थ- काशी-शास्त्रार्थ के उपरान्त अधिकतर शास्त्रार्थ स्वामी जी ने हिन्दी का अवलम्ब लेकर ही किए। मौलवी अहमद हुसैन से जालन्धर में, पादरी टी.जी. स्कॉट से बरेली में किए शास्त्रार्थ हिन्दी में ही थे।

पत्र और विज्ञापन- यद्यपि आवश्यकतानुसार स्वामी जी के पत्र संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, अंग्रेज़ी और उर्दू इन पाँच भाषाओं में मिलते हैं, परन्तु जब तक किसी अन्य भाषा में लिखवाने को बाध्य न होना पड़ा तब तक हिन्दी में ही लिखे और लिखवाए। अपने विज्ञापनों में स्वामी जी सरल संस्कृत के साथ-साथ हिन्दी का भी उल्लेख करते थे।

राजाओं को उपदेश- स्वामी जी के हिन्दी-प्रचार साधनों में राजाओं को दिए गये उपदेश का भी विशेष महत्त्व है। स्वामी जी ने अपने प्रभाव और सतत् प्रयास से इन राजपरिवारों में हिन्दी को स्थान दिलाया। राजाओं को मनुस्मृति एवं अन्य शास्त्र हिन्दी माध्यम द्वारा पढ़ाये और राजकुमारों को देवनागरी लिपि में पठन और लेखन का उपदेश दिया। स्वामी जी के आग्रह से उदयपुराधीश महाराजा सज्जन सिंह ने राजकार्य नागरी लिपि और सरल हिन्दी में करने की आज्ञा दी। स्वामी जी संस्कृत से भी अधिक महत्त्व हिन्दी को देते हुए महाराजा को कहते हैं- ''महाराज कुमार के संस्कार वेदोक्त कराकर प्रथम देवनागरी भाषा और पुन: संस्कृत विद्या पढ़ाइयेगा।''

स्वामी जी के ग्रन्थ- स्वामी जी के हिन्दी में लिखित ग्रन्थों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ **सत्यार्थप्रकाश** है। इस ग्रन्थ को हिन्दी साहित्य का युगनिर्माता कहने में अत्युक्ति नहीं है। उस काल में इस अमरग्रन्थ ने गद्य-साहित्य को प्रोत्साहित किया, उसे जीवनीशक्ति और ओज प्रदान किया तथा सदियों से प्रचलित पद्य-परम्परा का बन्धन तोड़, गद्य द्वारा न केवल विद्वानों अपितु साधारण पठित वर्ग के लिए ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, राजनीति, समाज-शास्त्र, धर्म आदि विषयों का पठन-पाठन सुलभ कर दिया। हिन्दी के अतिरिक्त २० भाषाओं में सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद होना भी उनकी प्रसिद्धि का द्योतक है। सत्यार्थप्रकाश के अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने संस्कार-विधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला, गोकरुणानिधि, आत्मचरित्र आदि ग्रन्थ भी हिन्दी भाषा में लिखकर गद्य-साहित्य को अद्‌भुत देन दी। यहाँ तक कि लोकभाषा हिन्दी में वेदभाष्य प्रस्तुत कर स्वामी जी ने अभूतपूर्व कार्य किया। साधारण जनता के लिए वेद केवल विश्रुतमात्र वस्तु था, उसका द्वार मनुष्य मात्र के लिए खोल दिया।

स्वामी जी की गद्य-शैली के विभिन्न प्रकारों ने हिन्दी-गद्य का प्रभूत विकास किया है। धर्माधर्म के निर्णय में गम्भीर तर्क-शैली, देश की दुर्दशा के वर्णन में करुणापूर्ण शैली, आर्यावर्त का गौरव प्रस्तुत करते हुए इतिवृत्तात्मक शैली, पुराण-खण्डन में हास्य और व्यंग्य की शैली आदि उनके विकसित गद्य के परिचायक हैं। उनकी करुणापूर्ण शैली का उदाहरण द्रष्टव्य है, गोमाता की दुर्दशा को देखकर स्वामी जी पुकार उठे थे- **''हे मनुष्यो! जब गो आदि सभी पशुओं को मारकर खा डालोगे तो मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं।''** सृष्टि-रचना के माध्यम से ईश्वरसिद्धि करते हुए स्वामी जी की वर्णनात्मक शैली भी अत्यन्त आकर्षक बन पड़ी है- ''देखो! शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़; नाड़ियों का बन्धन; मांस का लेपन; चमड़ी का ढक्कन; प्लीहा, यकृत्, फेफड़ा, पंखा कला का स्थापन; रुधिर-शोधन, प्रचालन; विद्युत का स्थापन; जीव का संयोजन; शिरोरूप मूलरचन; लोम, नखादि का स्थापन; आँख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन; इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन; जीव के जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण; सब धातु का विभागकरण; कला, कौशल, स्थापनादि अद्‌भुत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है।''

स्वदेशी राज्य के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए स्वामी जी की गौरवपूर्ण शैली का उदाहरण द्रष्टव्य है- ''कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।''

इस प्रकार हिन्दी गद्य में तर्कपूर्ण भाषा लिखने का प्रथम प्रयास स्वामी जी ने किया। उनके हास्य और व्यंग्य में शिष्टता है जो केवल अशिक्षित और अविद्याग्रस्त जनता को शिक्षित बनाने के उद्देश्य से लिखा गया है। **'ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति'** इस संस्कृत की उक्ति को चरितार्थ करते हुए स्वामी जी ने समाजसुधार और धर्मोपदेश के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया, साहित्यिक दृष्टि से भी उसका बहुमूल्य स्थान है।

६६७-ए/२९, तिलक नगर, रोहतक (हरियाणा)

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

ईश्वर (वैज्ञानिकों की दृष्टि में), प्रस्तुतकर्ता एवं अनुवादक - पं. क्षितीश कुमार वेदालङ्कार

मूल्य -१५० रु., **पृष्ठ** - २६४

दुनिया में दो तरह के मनुष्य पाये जाते हैं, एक वो जो भगवान् को अर्थात् उसके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और दूसरे वे जो भगवान् जैसी किसी सत्ता पर भरोसा नहीं करते। पहले को आस्तिक और दूसरे को नास्तिक कहा जाता है। नास्तिकों के अपने तर्क हैं और इन तर्कों में वे प्राय: वैज्ञानिक प्रयोगों, आविष्कारों, विज्ञान की प्रगति की दलीलों का ही हवाला देते हैं। विज्ञान है तो बहुत अच्छी चीज़, पर अगर कहीं किसी वैज्ञानिक की चूक से कुछ गलत निष्कर्ष आ जाये तो उसे आंखें बन्द करके मान लिया जाता है। आखिर वैज्ञानिक भी तो मनुष्य ही है, गलती तो वह भी करता ही है। इस तरह एक नये प्रकार का अन्धविश्वास 'वैज्ञानिक अन्धविश्वास' जन्म लेता है और दो अन्धविश्वास आपस में टकरा जाते हैं। जो भगवान् को नहीं मानता, वह भी सोचना नहीं चाहता, केवल दूसरों के भरोसे चलता है और जो मानता है, उसने भी अपना दिमाग बाबाओं के पल्ले बाँध रखा है। इन दोनों से अलग कुछ ऐसे भी होते हैं जो अपने मस्तिष्क को थोड़ा मेहनत करने देते हैं और सत्य तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। ऐसे ही कुछ वैज्ञानिकों के विचारों को इस पुस्तक में संकलित किया गया है। जरूरी नहीं कि ये सभी वैज्ञानिक भगवान् को स्वीकार करते ही हों, पर वह इतना तो स्वीकार करते ही हैं कि कुछ तो है जो विज्ञान की पकड़ से बाहर है। उनकी इसी 'ना' में शायद 'हाँ' छिपी है, बस अन्तर इतना ही है कि उनकी वह खोज बिना नाम वाली है और वेद ने उसको नाम दे दिया है- 'ईश्वर'।

त्रैतवाद- लेखक-विद्यामार्तण्ड पंडित बुद्धदेव विद्यालङ्कार

मूल्य-२० रु., **पृष्ठ** -४०

परिचय- पं. बुद्धदेव जी एक बार अपने आर्य मित्र के पास मिलने गये। उन्होंने देखा कि मित्र का बड़ा बेटा कम्युनिस्ट विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित है। कारण यह कि वह देश-विदेश में घूमकर आया है और किताबें भी कम्युनिज़्म की ही पढ़ता है। पंडित जी ने वह पुस्तक मांगी, जिससे कम्युनिज़्म का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा था। उस पुस्तक का नाम था The Origin of life on the Earth, जिसका विषय था, 'पृथ्वी पर पहली बार जीवन कैसे आया?' बुद्धदेव जी ने इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़कर इसकी समीक्षा की और उस समीक्षा की एक पुस्तक बन गई- त्रैतवाद।

आख्यातिक- लेखक- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य- २५० रु. , **पृष्ठ** - ६०८

परिचय- महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन पर बहुत बल देते थे। विशेषकर व्याकरण पर, जो कि सब शास्त्रों की कुंजी है। संस्कृत व्याकरण को सरल एवं सुगम बनाने के लिये उन्होंने पाणिनीय व्याकरण के सहायक ग्रन्थों के रूप में 'वेदांग प्रकाश' नाम से १४ पुस्तकें लिखीं। उनमें से आठवाँ भाग यह 'आख्यातिक' है। इसमें मूलत: धातु पाठ की व्याख्या है। साथ ही उन धातुओं के रूप निर्माण की प्रक्रिया को भी समझाया गया है।

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाता धारक का नाम - **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर।**

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

शङ्का समाधान - ३४

डॉ. वेदपाल, मेरठ

शङ्का- जब सुख-दुःख कर्मफल के अनुसार हैं, तो हम ईश्वर की उपासना क्यों करें?

-सुशान्त, उत्तमनगर, नई दिल्ली।

समाधान- शङ्का का मुख्य भाग उपासना के प्रयोजन के सम्बन्ध में है। प्रथम उपासना तथा उसका प्रयोजन ज्ञातव्य है-

१. जिस करके ईश्वर ही के आनन्दस्वरूप में अपने आत्मा को मग्न करना होता है, उसको उपासना कहते हैं

- आर्योद्देश्यरत्नमाला-२६

२. जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना। ईश्वर को सर्वव्यापक, अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है, ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है **-स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश-५०**

उपर्युद्धृत उद्धरण उपासना का स्वरूप तथा प्रयोजन स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं। एतद् अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव को पवित्र कर अपने को ईश्वर के आनन्दस्वरूप में निमग्न करना उपासना है। इसमें किसी बाह्य चेष्टा अर्थात् कर्मेन्द्रियों के द्वारा किसी प्रकार का लौकिक कर्म अपेक्षित नहीं है, क्योंकि महर्षि दयानन्द के अनुसार उपासना का फल-''**उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना है**''

-द्रष्टव्य-**सत्यार्थप्रकाश**, समुल्लास-७, पृ. ११९

यजुर्वेद २०.२७ का भाष्य करते हुए महर्षि लिखते हैं-

'यदा ध्यानावस्थितस्य मनुष्यस्य मनसा सहेन्द्रियाणि प्राणाश्च ब्रह्मणि स्थिरा भवन्ति, तदा स नित्यमानन्दति'

- जब ध्यानावस्थित मनुष्य के मन के साथ इन्द्रियाँ और प्राण ब्रह्म में स्थिर होते हैं, तभी वह नित्य आनन्द को प्राप्त होता है। इस विषय में **ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका** का 'उपासना-विषय' तथा **सत्यार्थप्रकाश** का सप्तम समुल्लास विशेषरूप से द्रष्टव्य है। जिससे यह सुव्यक्त है कि उपासना कोई लौकिक कर्म जिसमें बाह्य क्रिया-कलाप या शारीरिक चेष्टाएँ-क्रियाएँ अपेक्षित नहीं हैं। समग्र नहीं तो अधिकांश बाह्य क्रियाओं का प्रयोजन भौतिक सुख-भोग की प्राप्ति होता है।

कर्मफलानुसार जिस सुख-दुःख की प्राप्ति की बात शङ्का के पूर्व भाग में है, वह भोग की श्रेणी में है। यह व्यक्ति द्वारा कृत पुण्यापुण्य कर्मों के संचित कोटि में होने तथा इन पर आधृत कर्माशय के विपाक का परिणाम हैं। तद्यथा-

क- सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः

- योगदर्शन २.१३

जीव द्वारा किए गए पुण्यापुण्य कर्म के विपाक का परिणाम फल जाति (मनुष्य, पशु-पक्षी आदि), आयु (उस जाति के अनुरूप आयु- जीवनकाल जैसे मनुष्य का जीवनकाल लगभग सौ वर्ष, कुत्ता लगभग पन्द्रह वर्ष- इसी प्रकार अन्य प्राणियों का जीवनकाल है।) तथा भोग- भोग्य-सामग्री, जिसके द्वारा व्यक्ति सुख-दुःख का अनुभव करता है। तद्यथा-

'या भोगेष्विन्द्रियाणां तृप्तेरूप शान्तिस्तत्सुखम्। या लौल्याद् अनुपशान्तिस्तद् दुःखम्'- यो. द. २.१५ पर व्यासभाष्य-अर्थात् जीव के भोगसाधन-इन्द्रियों का भोग्य-विषयों (यथा चक्षु से रूप, जिह्वा से रस तथा त्वग् से स्पर्श आदि) द्वारा तृप्ति की उपशान्ति सुख तथा इन्द्रियों की अनुपशान्ति दुःख है।

ख- ते ह्लादपरितापफलाः पुण्यापुण्यहेतुत्वात्

- यो. द. २.१४

अर्थात् वे जाति, आयु तथा भोग पुण्यहेतुक- पुण्यकर्मजन्य होने पर सुखरूप फल तथा अपुण्यहेतुक- पापकर्मजन्य होने पर दुःख रूप फल वाले होते हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि सुख-दुःख के पुण्यापुण्यहेतुक होने पर भी अपने गुण, कर्म, स्वभाव की पवित्रतापूर्वक परब्रह्म से मेल/ईश्वर साक्षात्कार के लिए उपासना करनी चाहिए।

साहस का पर्याय: आचार्य धर्मवीर

लक्ष्मण जिज्ञासु

वह तेजपुंज वैदिक विचारधारा के संरक्षण हेतु सतत् जागरूक प्रहरी, धर्माघात करने वालों के हृदयों को जिनकी वाणी पाञ्चजन्य की ध्वनिसम विदीर्ण करती रही सहसा ही हमारे मध्य नहीं रहा। ''ऊर्जा के स्रोत'' अमर धर्मवीर को हमसे विमुख हुए 2 वर्ष व्यतीत हो गए, लेकिन वह रिक्त स्थान यथावत है, उसकी पूर्ति वर्तमान परिस्थितियों में दुष्कर प्रतीत हो रही है एवं इस वास्तविकता का निरन्तर भान कराती है।

शिवाजी की भूमि पर स्वातंत्र्य-प्रेमी ऋषिभक्त पण्डित भीमसेन जी के घर जन्मा यह बालक कपिल, कणाद, जैमिनी से दयानन्द पर्यन्त ऋषियों द्वारा प्रदत्त ज्ञानरूपी सोम का पान कर, शस्त्र-शास्त्रों से सुसज्जित, धर्म पर स्व एवं परकीयों द्वारा हो रहे आघातों से आकुल ह्रदय लिये वह धर्मरक्षक योद्धा इस समरभूमि में सर्वस्व न्योछावर कर अमृतत्व्य को प्राप्त हो गया।

उनका जीवन, कर्मक्षेत्र, धर्मक्षेत्र, समरक्षेत्र में अधर्मियों के कृत्यों से पीड़ित होने के उपरान्त अंगद सम धर्मपथ पर अटल रहने का उद्धरण प्रदर्शित करता हुआ अनन्त काल तक युवकों को प्रेरणा देता हुआ कीर्तिपुंज है। उनका जीवन दर्शन अगणित ऐसी घटनाओं से शोभित है जो धर्मपथगामियों को सदा ही प्रेरित करता रहेगा।

आरोप-पत्र या अभिनन्दन पत्र- भारतवर्ष का इतिहास साक्षी है कि विदेशियों की विजयपताका फहराने में सहायक स्वजन ही थे, बिना उनके इस धर्म-भूमि पर परकीयों के वर्चस्व का ध्वज कैसे गगन चूम सकता था!

हमने ही स्वयं की तलवारों से स्व बान्धवों के रक्त का पान कर इस मातृभूमि को विधर्मियों के सुपुर्द कर दिया। भला आर्यसमाज इस रोग से ग्रसित होने से कहाँ रह सकता था? लाला मूलराज आदि के द्वारा बोया गया यह परजीवी पौधा, मानस पुत्रों को जन्म देता रहा और वैदिक धर्म के प्रचार में अभिनव प्रयोग कर अनेकों बाधाएं पग-पग पर वैदिक धर्म के दीवानों के रास्ते में खड़ी की गयीं।

धर्मवीर जी का जीवन इससे अछुता नहीं था। आचार्य रामचन्द्र जी ने ऐसी ही एक घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि अधिकारियों ने व्यक्तिगत खुन्नस के कारण दयानन्द कॉलेज अजमेर से आपकी सेवाओं को निलम्बित कर दिया। आपके विरुद्ध जो आरोपपत्र जारी किया गया वह भी वास्तव में आपके कार्यों के महत्व का, आपके दृढ़ चरित्र का एक प्रमाण-पत्र है। उसमें आरोप लगाया लगाया था-**१.** आप परोपकारिणी सभा का कार्य करते हैं। **२.** आप परोपकारी पत्रिका का संपादन करते हैं। ३. आप आर्यसमाज का प्रचार करते हैं। इस पत्र को पढ़कर अचम्भित होना स्वाभाविक ही है कि ये अभिनन्दन पत्र है या आरोप पत्र!

धर्मवीर जी परिस्थियों से घबराने का नाम नहीं है धर्मवीर वह ज्वाला है जो तम आवृत जग के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करती रही। क्या ये यातनाएं धर्मवीर को पथ से विचलित कर सकती थीं? क्या ये यातनाएं वेदनाएं उनके साहस को चूर-चूर करने में सक्षम थीं? वह ऋषि-भक्ति के लिए समर्पित योद्धा विश्व के वैभव लालसाओं का त्याग कर चुका था? ऋषि दयानन्द ही उसके लिए सर्वस्व था।

जीत की हार- श्रद्धेय श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने आचार्य धर्मवीर जी की जीवनी में एक घटना का उल्लेख किया है कि जब प्राचार्य वाब्ले धर्मवीर जी को अपमानित करने व कुचलने पर तुला हुआ था उन्हीं दिनों उसने अहंकार में आकर धर्मवीर जी से कहा ''मैं यदि तुम्हें निकाल दूँ तो सुप्रीम कोर्ट भी तुम्हें नहीं रखवा सकता।''

जितने भरपूर अहंकार में प्राचार्य वाब्ले ने धर्मवीर जी को धमकी देकर डराया और उनका मनोबल गिराना चाहा उतने ही अटल ईश्वर-विश्वास तथा आत्मबल से आपने उसे तत्काल उत्तर दिया **''मैं मनुष्य को भगवान् नहीं मानता और अजमेर को सकल सृष्टि नहीं मानता''**

प्रखर ऋषिभक्ति- धर्मवीर जी महाराणा प्रताप के साहस, अभिमन्यु के महान पौरुष की प्रतिमूर्ति थे। भला वह इन वज्र सम विपदाओं से कहाँ विचलित हो सकते

थे। ऋषि मार्ग के पथिक का समझौतावादी व्यक्तित्व न होने के कारण ऐसा प्रतीत होता था मानों वे स्वयं विपदाओं को आमन्त्रित कर रहे हों। ये जग उन्हीं धर्मवीरों का गायन करता है जो विपदाओं की परवाह किये बिना प्राण हथेली पर लिए रणभूमि में अर्जुन के गांडीव की तरह गुंजायमान हो रिपु दल के हृदयों को विदीर्ण कर विजय रस का पान करते हैं।

आचार्य धर्मवीर जी की इस विशेषता से कोई अभागा ही हो जो परिचित न हो। वैदिक धर्म पर यदि कहीं भी प्रहार होता था तो उनकी आत्मा कम्पायमान हो उठती थी, उनका ह्रदय वेदना से भर उठता था और कभी ऐसा न हुआ कि वैदिक धर्म पर प्रहार हुआ हो और धर्मरक्षक धर्मवीर की लेखनी न चली हो।

धर्म पर प्रतिवाद विश्व के किसी भी कोने में हो, चाहे वो ईसाइयों का ''पवित्र ह्रदय'' पत्रिका, जमाअते इस्लामी के ''कान्ति'' मासिक का पुनर्जन्म खंड विशेषांक, रामपाल का ऋषि के प्रति विष वमन या स्वजनों का द्रोहराग धर्मवीर जी की लौह लेखनी सदैव उद्वेग से, आवेश से इनका प्रतिकार करती रही। श्रद्धेय राजेन्द्र जिज्ञासु जी द्वारा लिखित ''अमर धर्मवीर'' में ऐसे अनेकों उद्धरण उन्होंने दिए हैं। धर्मवीर जी विधर्मियों द्वारा धर्म पर कुत्सित प्रहार का बिना प्रतिकार लिए कहाँ चैन से बैठने वाले थे। धार्मिक गर्व पर अरि का प्रहार हो और जब तक प्राण हैं गौरव मर्दन कैसे हो सकता है। धर्मवीर जी भीम की गदा, अर्जुन के गांडीव, हिमगिरि सदृश्य रक्षक बन सदैव खड़े हो जाते थे। उस धीरता की प्रतिमा, कोमल ह्रदय देव का पौरुष, क्षत्रित्व सदा जागृत रह मानो धर्म की रक्षार्थ प्रज्वलित ज्वाला लिए न केवल अम्बर को गुंजायमान कर रहा था अपितु अनेकों आर्यवीरों को सुप्तता से जगाने, धर्म के प्रति सजग होने की प्रेरणा का निमित्त था।

धर्म पर प्रहार होने की स्थिति में आर्य लोग केवल परोपकारिणी पत्रिका की तरफ ही आशा लिए निहारते थे। उन्हें आभास था यह वो धर्मवीर पौरुष है जो किसी लोभ के वश मूक नहीं रह सकते, यह वह नेता कथित योगी नहीं जो दिन रात निमग्न योग चिन्तनादि में ही लीन रहे। अपितु वो तो वह वीर योद्धा है जिसकी तलवार कभी म्यान में नहीं सोती, वह तो हर दु:शासन के लिए भीम का प्रतिशोध है, हर हिरण्यकश्यप के लिए नृसिंह का प्रतिशोध है, वह तो लेखराम जैसी धर्म-धुन का धुनी है, जो यज्ञ वेदी पर धर्म की रक्षार्थ सर्वस्व समर्पित करने के लिए सदैव उद्यत है।

वैदिक सिद्धातों पर निष्कंप निष्ठायुक्त, ऋषि की वाटिका के पुष्पों के रक्षार्थ सर्वस्व समर्पण का प्रण लिए, स्वधर्मियों के अन्यायों से त्रसित वह विप्र, समर्पण का प्रतिकार करता हुआ, वज्र सम धर्म के मार्ग पर अविचल जीवन व्यतीत कर वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए ऐसा जीवन दर्शन प्रस्तुत कर गया जो अनेक धर्म रक्षकों के पथ को अंतरिक्ष में ध्रुव के सम द्वीपित करता रहेगा।

धर्मवीर प्रतिपल युवकों में गौरवमयी आर्यत्व चैतन्य भरने का प्रयास सतत करते रहते थे। उनका स्नेह, उनका समर्पण युवकों को सदैव आकर्षित करता था। वह प्रतिभा के धनी, गहन शोध, ऋषि भक्ति, देशभक्ति के पर्याय थे। उनका जीवन स्वयं में एक दर्शन है। आज आवश्यकता है कि हम उनके जीवन से प्रेरणा लें उस धुन के धुनी बनें।

(पण्डित लेखराम वैदिक मिशन)

कल्पित संन्यासी

जब एषणा ही नहीं छूटी तो संन्यास क्योंकर हो सकता है? पक्षपात रहित सत्योपदेश से जगत् का कल्याण करने में अहर्निश प्रवृत्त रहना संन्यासियों का मुख्य काम है। अब अपने अधिकार कर्मों को नहीं करते पुन: संन्यासादि नाम धरना व्यर्थ है। नहीं तो, जैसे गृहस्थ व्यवहार और स्वार्थ में परिश्रम करते हैं, उनसे अधिक परिश्रम परोपकार करने में संन्यासी भी तत्पर रहे, तभी सब आश्रम उन्नति पर रहें। जब लों वर्तमान और भविष्यत् में संन्यासी उन्नतिशील नहीं होते, तब लों आर्य्यावर्त और अन्य देशस्थ मनुष्यां की वृद्धि नहीं होती।

(स. प्र. स. ११)

एक स्मरण: अग्नि पुरुष को नमन

आ. अखिलेश आर्येन्दु

आवाज दो... आवाज दो... हम हार नहीं मानेंगे, हम रार नहीं ठानेंगे, लेकिन ऋषि के लिए कुछ भी कर जाएँगे। हम वैदिक धर्म के पथिक, धर्म के हम गीत गाते हैं, दुनिया को जगाते हैं। ये पंक्तियाँ डॉ. धर्मवीर के जीवन को देखकर बरबस निकल पड़ती हैं। पं. लेखराम, पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा अमर स्वामी और रामचन्द्र देहलवी की जो मिशनरी की धारा आर्यसमाज में द्रष्टव्य होती है, वह धारा वैदिक धर्म के दीवानों और योद्धाओं की धारा रही है। वैदिक धर्म के मिशनरियों की धारा रही है। ये वैदिक धर्म के मतवाले वेद पथिक कभी निराश, हताश और पलायन इनके शब्दकोश में नहीं। इन रणबाँकुरों का जीवन तो हर पल संघर्षों, समस्याओं और विसंगतियों से रूबरू होने वाला है। संघर्षों और प्रतिकूलताओं से इन्हें ऊर्जा और आत्मिक शक्ति मिलती है। इसी धारा के पथिक थे डॉ. धर्मवीर जिनकी कथनी और करनी में एकरूपता और वाणी में ओजस्विता साफ झलकती थी।

डॉ. धर्मवीर जी को मैं अपने छात्र जीवन से ही जानता था। परिचय तो नहीं था लेकिन उनके कृतित्व और व्यक्तित्व की चर्चा प्रयाग के विद्वत् समाज में जब होती थी तो मैं बहुत ध्यान से सुना करता था। वैसे आर्यसमाज में ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ डाक्टर साहब की चर्चा किसी न किसी रूप में न होती रहती हो। प्रयाग से दिल्ली आने के बाद मेरा परिचय लगभग २० वर्ष पहले उनसे हुआ और एक ही परिचय में उनकी प्रखर, झंकृत करती हुई आवाज ने हमें अन्दर तक झकझोर दिया। स्पष्ट, बेबाक और सच बोलने वाला निर्भीक वेद और दयानन्द के निर्भीक सिपाही के रूप में उनकी छवि मेरे अंत:चेतना में हमेशा के लिए अंकित हो गई।

वेद में सत्य और ऋतगामी मानव को अग्नि के समान माना गया है। सत्य को धारण करना, सत्य ही कहना और सत्य को ही मानना डॉक्टर साहब के चरित्र का सबसे उज्ज्वल पक्ष रहा। उन्होंने सत्य, शुभ और सुन्दर का रास्ता चुना था, जिसे उन्होंने जीवन भर अपनाये रखा। कभी कठिनाइयों और परेशानियों में भी नहीं छोड़ा। जहाँ तक मैं समझता हूँ उन्होंने सत्य और न्याय को लेकर कभी समझौता नहीं किया। जब भी मिले तुरन्त पूछा...और बताओ भाई, क्या समाचार हैं आपके? कैसा चल रहा है जीवन आदि आदि। जीवन में एक सहजता, सरलता और स्पष्टता मानव को कितना ऊपर उठा सकती है यदि इसे देखना हो तो हमें डॉक्टर धर्मवीर के जीवन में झाँकना चाहिए।

कुछ लोग उनकी स्पष्टवादिता और तीक्ष्णता की आलोचना करने वाले भी थे, लेकिन डॉक्टर साहब ने ऐसे आलोचकों की कभी परवाह नहीं की, क्योंकि उन्होंने सत्य और पवित्रता का जो रास्ता चुना था वह किसी भी तरह और किसी भी दृष्टिकोण से गलत नहीं था। ज्ञान-विज्ञान, वेद और आर्यसमाज डॉक्टर साहब के जीवन से के अंग थे। वह वेद, आर्यसमाज और वैदिक धर्म के पथिक होने पर गर्व का अनुभव किया करते थे। जब भी मैं उनसे मिला, उन्होंने कोई न कोई प्रसंग अवश्य छेड़ दिया और उसी के बहाने आर्यसमाज और आर्यसमाजियों की खोज-खबर भी ले लिया करते थे। कोई कितना भी बड़ा व्यक्ति हो (पद, पैसे या ज्ञान में) उससे अपनी बात कहने में कभी झिझकते मैंने नहीं देखा। ऐसी गजब की निर्भीकता आज के समय में बिरले लोगों में देखने में मिलती है। सत्य, धर्म और विज्ञान जिसके जीवन का आधार होता है उसमें ही ऐसी निर्भीकता आ सकती है।

जैसा नाम वैसा गुण की कहावत उनके साथ पूरी तरह ठीक बैठती है। धर्म के वे ऐसे योद्धा थे जो कभी किसी लालच, विषय, देश-काल के कारण हार मानने वाले नहीं थे। जिस वेद और वैदिक धर्म के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया था उसके लिए वे जीवन की अन्तिम श्वास तक लगे रहे। पिछले २० वर्षों में ऋषि मेले में मुझे कई बार वेदगोष्ठी में भाग लेने का सुअवसर मिला। वेद गोष्ठी जब भी होती थी, तब वे मुझे उसमें भाग लेने के लिए बोलते थे। मैं अपना कर्त्तव्य और धर्म मानकर कई वेद गोष्ठियों में सम्मिलित भी होता रहा। गोष्ठी में भाग लेने से मुझे कई लाभ हुए। ऐसे विषयों का स्वाध्याय और अनुसन्धान के प्रति रुचि बढ़ी जो मेरे पत्रिका और अखबारी लेखन से अलग तरह का है। निश्चत ही डॉ. धर्मवीर जी का मैं इसके लिए आभारी रहूँगा। मेरे अतीव शुभचिंतक मित्र डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी जी

(दिल्ली) ने मुझे डॉ. साहब के जीवन सम्बन्धी जितनी विशेषताओं की चर्चा की थी (डॉ. साहब के तिरोधान से पूर्व) वे सभी विशेषताएँ (सद्गुण) डॉ. साहब के गुण, कर्म और स्वभाव में हमेशा परिलक्षित मिले। आज अब जबकि वे इस धराधाम पर नहीं हैं, ऐसे अग्नि पुरुष के अवदान को भला कुछ शब्दों में मैं कैसे स्मरण करूँ!

महाकवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने कर्मवीर महापुरुषों की कसौटी अपनी कविता 'कर्मवीर' में इस प्रकार वर्णित किया है, जो डॉक्टरसाहब के लिए पूरी तरह ठीक बैठती है-

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।

और डॉ. साहब तो आर्यसमाज के प्रेरणा पुरुष थे। उनकी पहचान ही दयानन्द और वेद से हुआ करती थी। वह किसी ऐसे किसी काम को अलभ्य नहीं मानते थे जो वेद के प्रतिकूल न हो। उनकी कसौटी वेद और वेद के ऋषि हुआ करते थे। वे स्वनाम धन्य ऐसे गौरव पुरुष थे जिनकी करनी और कथनी की एकरूपता आज भी हमारे लिए एक मिसाल ही है। 'हरिऔध' की ये पंक्तियाँ उनके सद्गुणों को जैसे रेखांकित कर रही हों-

बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिए
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए
गगन को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर
वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठों पहर।

मानव जीवन का कोई भी पक्ष हो यदि उसमें ओज, तेज और सत्य का समावेश है तो वह मानव समाज को नई ऊर्जा और सीख देता ही है। फिर, हम तो उस दयानन्द के अनुगामी हैं जहाँ, सत्य, शिव और सुन्दर ही जीवन का आधार है। डॉ. साहब पाखण्ड, अन्धविश्वास और बुराइयों से निरन्तर लड़ते रहे। मैंने जब भी उन्हें देखा वेद प्रचार में या आर्यसमाज के उत्सवों में प्रेरणापुरुष के रूप में दिखाई पड़े। स्मरण आता है महर्षि दयानन्द के महाप्रयाण के १२५ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित उस १२५ वीं शताब्दी वर्ष का, जब उन्होंने मुझे 'मीडिया प्रमुख' के रूप में कार्य करने का भार सौंपा था। मैंने महोत्सव में अखबारी और इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया के लिए जो भी समाचार बनाए और छपे उसकी उन्होंने मुक्त कंठ से सराहना की। मुझे लगा वाकई में उन्हें पत्रकारिता क्षेत्र की ही नहीं बल्कि उसके सकारात्मक पक्ष की भी बेहतर जानकारी है। उस कार्यक्रम के उपरान्त उनसे मेरी और भी घनिष्ठता हो गई। उनसे ही क्यों, उनकी कर्तव्यनिष्ठा पत्नी श्रीमती ज्योत्स्ना जी से भी। एक व्यवहारकुशलता जो आज के आर्य बन्धुओं का कमजोर पक्ष होता जा रहा है। लेकिन डॉ. धर्मवीर जी यथायोग्य व्यवहार के अनुपम जौहरी थे।

पिलखुआ जहाँ उनके जीवन का अन्तिम अध्याय लिखा गया के समय की बात है। मैंने उन्हें फोन किया...डॉक्टर साहब कहाँ हैं? क्या अभी बात करना ठीक रहेगा? बोले हाँ, बोलो क्या बात है? मैंने कहा इस वर्ष वेदगोष्ठी कब होगी और उसके विषय और तिथि के बारे में विस्तार से पूछा तो, उन्होंने तुरन्त गोष्ठी का विषय बताया और लगे हाथ यह भी कह दिया...गोष्ठी में जरूर आना। मैंने उन्हें गोष्ठी में आने का आश्वासन दिया और फोन काट दिया। उस समय वे किसी प्रकार के बुखार से गम्भीर रूप से पीड़ित थे लेकिन एक शब्द भी उन्होंने नहीं कहा कि मेरी तबियत खराब है...या मुझे किसी तरह की कोई परेशानी है। अपना दुःख किसी से न कहकर केवल परमात्मा से कहने की आदत उनकी पुरानी थी।

हम भाग्यवादी नहीं हैं लेकिन उनके अकस्मात् अपना कार्य और जीवन समेट लेने के बाद इतना तो मानना ही पड़ा कि परोपकारी सभा के भाग्य में अब ऐसे निस्पृह कृतित्व और व्यक्तित्व वाले अग्निचेता पुरुष के पुरुषार्थ का अवदान लेना संभव नहीं था और अंत में वैदिक धर्म के धर्मवीर को अपनी इन पंक्तियों से स्मरण करता हूँ और उनके प्रेरणीय और संग्रहणीय जीवन का पुण्य स्मरण करता हूँ।

वेदधर्मी, ज्ञानधर्मी, राष्ट्रधर्मी को नमन्।
सत्यधर्मी, आर्यधर्मी, विज्ञानधर्मी को नमन्।
जिनके हर धड़कन में ऋषिवर दयानन्द नाम था।
जिनके हर कार्य में ऋषिवर दयानन्द धाम था।
जिनके स्वरों में ओ३म् का झन्कार और आह्वान था।
वेद जिनका मिशन था, प्रचार जिनका स्वाभिमान था।
ऐसे कर्मवीर धर्म पथिक को बारम्बार मेरा नमन्!
ऐसे ऋषि के मिशनरी को अनगिनत मेरा नमन्!

मेरी मन की व्यथा।

ओम् मुनि

मन की व्यथा किसे सुनाऊँ, किसको लिखूँ- भारी मन से आज आप सब आर्यों की सेवा में लिखने का मन बना। समस्त विश्व के आर्यों, हिन्दुओं को इस कष्ट के साथ लिख रहा हूँ कि हम आर्यों की श्रद्धा कब काम आवेगी। आज चारों ओर से चाहे वैचारिक हो, चाहे सांस्कृतिक, हमले हो रहे हैं। हिन्दू-समाज हाथ पर हाथ धरकर गाढ़ निद्रा में सो रहा है, अपना परिश्रम व पैसा धर्म के नाम पर केवल पाखण्ड में पानी की तरह बहा रहा है। आज कभी किसी की मूर्ति की स्थापना व कभी किसी और मूर्ति की स्थापना में करोड़ों रुपया खर्च किया जा रहा है। सारी-सारी रात नाचने-गाने में व्यतीत की जा रही है, फिर उसके ५-७ दिन बाद उन सब मूर्तियों को तालाबों में फेंक कर पानी गन्दा किया जा रहा है। इससे धर्म का क्या लाभ हुआ? राष्ट्र को क्या मिला? केवल हम तालाबों को गन्दा कर रहे हैं, पानी को सड़ा रहे हैं। थोड़ा-सा विचार करें कि इस सबसे क्या लाभ होगा। हिन्दू समाज को पाखण्ड के दलदल से निकालने के लिये ऋषि दयानन्द ने अनेक उपाय किये। यहाँ तक कि उन्हें अपनी जान भी गँवानी पड़ी, पर सोया हुआ हिन्दू समाज फिर भी न जागा। ऋषि ने मूर्तिपूजा, श्राद्ध, तर्पण, बलिप्रथा आदि अनेक कुप्रथाओं का घोर खण्डन किया। पर आज भी हिन्दू-समाज अपनी जड़ता को खोना नहीं चाहता है। उसमें ये सारी कुप्रथायें आज भी विद्यमान हैं। वह अपने धन को धर्म के बजाय पाखण्ड करने में लगा रहा है। हमें ऋषि के बताये मार्ग पर एकजुट होकर आगे बढ़ना होगा।

आज हमारे सामने कई बड़ी समस्यायें हैं उनकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता है। हम सब मिलकर इन बीमारियों से समाज को बचाने का प्रयास करें तो उत्तम होगा। महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की ओर से मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि **आप अपना धन धर्म की रक्षा के लिये खर्च करें, अच्छे साहित्य के प्रकाशन हेतु खर्च करें, धर्म-प्रचार प्रसार हेतु खर्च करें। सभा चाहती है कि अच्छे से अच्छे साहित्य का प्रकाशन हो, परन्तु धन के अभाव में ये कार्य रुक जाते हैं।** इन्हें चलाने के लिये देश का प्रत्येक आर्य, हिन्दू विचार कर ले कि हम इस कार्य के लिये सभा को कम से कम १००/-रुपया प्रतिमाह या सामर्थ्य के अनुसार अधिक भी दे सकें तो सभा इस धन से अच्छे साहित्य का प्रकाशन कर सस्ते से सस्ते में जनता को वितरण कर सकती है। साहित्य का प्रकाशन आवश्यक है। लोगों की माँग भी रहती है, परन्तु सभा अपने सीमित संसाधनों से जितना कर पाती है वह ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। सभा अनेक ऐसे प्रकल्प चला रही है, जिससे कि ऋषि के उद्देश्यों को पूरा करने में सहायता मिल सकती है। यथा- आर्ष गुरुकुल का संचालन, परोपकारी पाक्षिक पत्र का प्रकाशन, गौशाला का संचालन, आगन्तुक अतिथियों के लिये निःशुल्क भोजन व आवास व्यवस्था, वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम के संचालन आदि-आदि।

मैं सभी देशवासियों से, आर्य माता, बहिनों व भाइयों से व्यथित होकर निवेदन कर रहा हूँ कि आप लोग इस ज्ञान-यज्ञ में मुक्त हस्त से सहयोग करें ताकि प्रकाशन का कार्य तथा सभा द्वारा संचालित किये जा रहे अनेक प्रकल्प तीव्र गति से चलें व आपके धन का सदुपयोग भी हो एवं जनता के बीच सद्साहित्य भी पहुंचे। आशा है कि आप मेरी पीड़ा को दूर करने में सहायता अवश्य करेंगे।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित ऋषि मेले में आप सभी आमन्त्रित हैं।

१६, १७, १८ नवम्बर २०१८, **सम्पर्क**- ०१४५-२४६०१६४

आर्यजगत् के समाचार

१. ऋषि बोधोत्सव का आयोजन- प्रतिवर्ष की भाँति आगामी वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन ०३, ०४, ०५ मार्च २०१९ को किया जावेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्यसमाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

२. श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह मनाया- आर्यसमाज मन्दिर दयालपुरा, करनाल में श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह रक्षाबन्धन से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक २६.०८.२०१८ से ०३.०९.२०१८ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

३. विद्यार्थी अवार्ड दिवस मनाया- महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान के श्री के.एल. मेहता दयानन्द विद्यालयों ने अपने संस्थापक अध्यक्ष महात्मा कन्हैयालाल मेहता का जन्मदिवस विद्यार्थी अवार्ड दिवस के रूप में अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाया। कार्यक्रम में सी.बी.एस.ई. एवं हरियाणा बोर्ड की १०वीं कक्षा के उन विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने इस संस्थान के अंतर्विद्यालयों में सर्वोच्च अंक प्राप्त किये।

४. भजन एवं प्रवचन का सम्पन्न- नगर आर्यसमाज जोधपुर की गुलाबसागर स्थित श्री आर्य मरुधर व्यायामशाला में आषाढ़ पूर्णिमा शुक्रवार २७ जुलाई २०१८ को प्रात: यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। देवयज्ञ में पूर्णिमा की विशेष आहुतियों के साथ उपस्थित सभी आर्यजन और आर्यवीरों ने गायत्री मन्त्र से विशेष आहुति प्रदान की।

५. योग शिविर सम्पन्न- आर्यसमाज मगरा पूँजला, जोधपुर में १९, २० व २१ जुलाई २०१८ को त्रिदिवसीय नि:शुल्क योग शिविर, वेद प्रचार एवं आध्यात्मिक प्रवचन कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर आर्यवीर दल राजस्थान के प्रान्तीय मन्त्री श्री भवदेव शास्त्री ने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, मगरा-पूँजला में रोगों के उपचार एवं बचाव की जानकारी दी।

६. शिविर सम्पन्न- आर्यसमाज सांभर जयपुर के तत्त्वावधान में आयोजित आर्य वीरांगना कन्या चरित्र प्रशिक्षण शिविर तारीख १६ से २३ जून २०१८ तक आर्यसमाज सार्वदेशिक सभा की प्रधान व्यायाम शिक्षिका बहन अभिलाषा के सानिध्य में हुआ। १७० वीरांगनाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। स्वामी सोमानन्द सरस्वती एवं आचार्य सत्यम का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

७. प्रदर्शन व ज्ञापन दिया- आर्यसमाज हापुड़ ने राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए भारत में अवैध घुसपैठियों को बाहर निकालने के लिए सोमवार ०६ अगस्त २०१८ प्रात: ९ बजे से ११ बजे तक आर्यसमाज के गेट पर धरना-प्रदर्शन कर उप-जिलाधिकारी के माध्यम से महामहिम राष्ट्रपति महोदय को ज्ञापन दिया।

८. वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न- आर्यसमाज हिरणमगरी उदयपुर में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन २० से २६ अगस्त २०१८ तक किया गया। डॉ. सोमदेव जी शास्त्री (मुंबई) के ब्रह्मत्व में प्रात: एवं सायं दोनों समय यज्ञोपरान्त भजनोपदेशक पण्डित केशवदेव शर्मा (सुमेरपुर) ने हृदयग्राही भजन प्रस्तुतियाँ दीं।

९. योग कार्यशाला सम्पन्न- आर्यसमाज टेल्को-गोविन्दपुर एवं योग सेवा समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक १९ अगस्त २०१८ रविवार, गोविन्दपुर, जमशेदपुर स्थित पटेल भवन में ''संगीत (भजन) संध्या एवं हृदयरोग कारण सह-निवारण योग कार्यशाला'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती सुनीता शाह (पार्षद) एवं विशिष्ट अतिथि श्री इन्द्रदेव शास्त्री, (उपाध्यक्ष) आर्यप्रतिनिधि सभा झारखण्ड ने कार्यशाला का उद्घाटन किया।

१०. वेद कथा सम्पन्न- बिल्सी तहसील क्षेत्र के ग्राम गुधनी (जिला-बदायूँ) में आर्यसमाज के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व पर दिनांक २० से २८ अगस्त तक आयोजित वेद कथा का हर्षोल्लास के साथ समापन हो गया। इस अवसर पर आचार्य संजीव रूप ने श्रद्धालुओं को शुभ संकल्प कराए और बुराइयाँ छोड़ने का आह्वान किया।

११. वृष्टि यज्ञ व वार्षिकोत्सव मनाया- मगरा-पूंजला स्थित आर्यसमाज मन्दिर महर्षि पाणिनि नगर के १४ दिवसीय बृहद् वृष्टि यज्ञ व आर्यसमाज के १९ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर वृष्टि यज्ञ में लोगों ने आहुति प्रदान की।

शोक-समाचार

१२. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में व्याख्याता, आर्य विद्वान् डॉ. रामचन्द्र की माता **श्रीमती मानकँवर** का दिनांक २४ सितम्बर २०१८ को ८० वर्ष की आयु में निधन हो गया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगतात्मा को सद्गति प्रदान करें।

१३. आर्यसमाज के भजनोपदेशक, प्रचारक **पण्डित श्यामवीर राघव** का दिनांक २४ सितम्बर २०१८ को देहावसान हो गया है। परमात्मा शोक संतप्त परिवार को धैर्य व साहस प्रदान करे।

१४. द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल, देहरादून के संस्थापक **डॉ. वेदप्रकाश आर्य** का ७ सितम्बर २०१८ को निधन हो गया है। श्रद्धाञ्जलि सभा एवं शान्ति यज्ञ का आयोजन दिनांक १९ सितम्बर को गुरुकुल परिसर में ही किया गया।

परोपकारिणी सभा एवं परोपकारी पत्रिका की ओर से सभी दिवंगतात्माओं को हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

वैवाहिक

१५. वधु चाहिये- आर्य परिवार, संस्कारित, आयु- ४० वर्ष, कद- ५ फुट ८ इंच, शिक्षा- स्नातक, व्यवसायी युवक हेतु आर्य परिवार की समकक्ष संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क- ०९४५७२७४९८४**

१६. वधु चाहिये- आर्य परिवार, संस्कारित, जन्म- १९/०२/१९८७, कद-५ फुट ८ इंच, शिक्षा-बी.टेक, व्यवसायी (N.N.C.) युवक हेतु आर्यसमाजी परिवार की संस्कारित युवती चाहिए। **सम्पर्क- ०९८१४२६२५७४**

चुनाव समाचार

१७. आर्यसमाज आर्य उप प्रतिनिधि सभा, शास्त्री नगर, जि. धौलपुर, राज. के चुनाव में **प्रधान**- डॉ. लाजपति शर्मा, **मन्त्री**- श्री रघुवीर मुनि, **कोषाध्यक्ष**- श्री राममुनि को चुना गया।

१८. महिला आर्यसमाज आर्य उप प्रतिनिधि सभा, शास्त्री नगर, जि. धौलपुर, राज. के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती कमलेश गर्ग, **मन्त्राणी**- श्रीमती शारदा आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्रीमती अनीता गुप्ता को चुना गया।

१९. दि. ८ जुलाई २०१८ को हुए **आर्यसमाज कैलाश ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली** के चुनाव में वर्ष २०१८-२०१९ के लिये **प्रधान**- श्री विजय लखनपाल, **मन्त्री**- श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री अमरसिंह पहल को चुना गया।

२०. दि. ९ सितम्बर २०१८ को हुए **आर्यसमाज मन्दिर, राजगढ़, अलवर, राज.** के चुनाव में **प्रधान**- श्री विनोदीलाल दीक्षित, **मन्त्री**- श्री नन्दसिंह आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री धर्मसिंह आर्य को चुना गया।

२१. महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कोटा, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री श्रीचन्द गुप्ता, **मन्त्री**- श्री चन्द्रमोहन कुशवाहा, **कोषाध्यक्ष**- श्री नरेन्द्र विजय को चुना गया।

पाठकों की प्रतिक्रिया

२२. नमस्ते जी, विगत तीन माह (छः अंक) से परोपकारी पत्रिका नियमित रूप से मिल रही थी, लेकिन इस बार सितम्बर प्रथम अंक नहीं मिला। परोपकारी कोई ऐसी पत्रिका नहीं है, जिसके लिये कहा जा सके कि कोई अंक छूट जाये तो क्या फर्क पड़ता है। मैं तो परोपकारी पत्रिका को आर्ष विद्यालय ही कहता हूँ।

-डॉ. अनन्त हरकुल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)।

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान में अष्टाध्यायी अनुक्रम से संस्कृत व्याकरण, दर्शन एवं अन्य ऋषिकृत ग्रन्थों की कक्षाएँ प्रारम्भ हो रही हैं। अध्ययन आर्ष पाठविधि से कराया जायेगा। विद्यार्थियों के आवास एवं भोजनादि का सम्पूर्ण व्यय सभा की ओर से किया जायेगा। गुरुकुल सम्बन्धी सभी नियमों एवं दिनचर्या आदि का पालन अनिवार्य होगा। विद्यार्थी की आयु न्यूनतम १६ वर्ष हो। इच्छुक छात्र निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें।

आचार्य,

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल,

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.)

सम्पर्क-०१४५-२४६०१६४

Email- psabhaa@gmail.com